माहे मुहर्रम

'नए साल की खुशियाँ' या 'ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ'

देखा जो चाँद मुहर्रम का, करबल का फसाना याद आया
वो धूप से तपती रेत पर, अहमद ﷺ का घराना याद आया।

मुरत्तिब
डो. शहेज़ाद हुसैन क़ाज़ी

नाशिर : इमाम जा'फ़र सादिक़ फाउन्ड़ेशन
(अेहले सुन्नत)

माहे मुहर्रम

“नए साल की ‘ख़ुशियां’
या
‘ग़मे हुसैन’ رضی اللہ عنہ”

देखा जो चांद मुहर्रम का, करबल का फसाना याद आया
वो धूपसे तपती रेत पर, अहमद ﷺ का घराना याद आया ।

मुरत्तिब

डो. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी

:: नाशिर ::

इमाम जा’फ़र सादीक़ फाउन्ड़ेशन (अहले सुन्नत)

किताब का नाम : **माहे मुहर्रम "नए साल की 'ख़ुशियाँ' या 'ग़मे हुसैन' ﷺ" (अहादीष की रौशनी में)**

मुरत्तिब : **डॉ. शहज़ाद हुसैन क़ाज़ी**

Edition : Second

सफ़हात : **57**

सने ईशाअत : **1** मुहर्रम, **1442** हिजरी **; 21 August 2020**

कम्पोज़िंग : **इमाम जा'फर सादीक फाउन्डेशन** (अहले सुन्नत), मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया

मिलने का पता

इमाम जा'फ़र सादीक़ फाउन्डेशन

(अहले सुन्नत)

मोडासा, अरवल्ली, गुजरात, इन्डिया
+91 85110 21786

अर्ज़े नाशिर

अल्लाह ! के नाम से शुरु के जो बड़ा महरबान बख़्शनेवाला है, नहीं है कोई मा'बूद सिवा अल्लाह ! के और मुहम्मद अल्लाह के रसूल है । अल्लाह ! का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझ से "नए साल की 'खुशियाँ' या 'ग़मे हुसैन' " किताबचे की किताबत का काम लिया ।

एक ऐसा भी वक़्त था जब मुसलमान हुक्मरानों ने अह्ले बैते अतहार, ख़ास कर बनू फ़ातिमा पर बडे अर्से तक वो ज़ुल्म किए जो शायद ही किसी नबी की आल पर उस नबी की उम्मत ने किये हो । ज़ुल्म आज भी हो रहा है सिर्फ तरीक़ा बदला है, उस ज़माने में आले मुहम्मद को जिस्मानी तक़लीफें दी जाती थी, मिम्बरों पर उलमा को आले मुहम्मद को बुरे अल्फाज़ो से याद करने पर मजबूर किया जाता था, मुहद्दिषीन को उनसे रिवायत लेने पर सजाएं दी जाती थी, कहीं इमामे आज़म अबू हनीफ़ा को इमाम नफ़्सुसज़किया की मुहब्बत की वजह से कैद किया गया, तो कहीं इमाम शाफीई पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगा कर उन्हें जलील किया गया, कहीं इमाम निसाई को मौला अ़ली की मुहब्बत की वजह से शहीद किया गया तो कही इमाम हाकिम जैसे मुहद्दिषीन पर शिया के फ़तवे लगाकर उनके मिम्बर को तोड़ दिया गया । एक ज़माने तक ये चलता रहा मगर अह्ले बैत के गुलाम कभी अम्मार बिन यासिर बनकर मैदाने जंग में आये तो कही अबू ज़र की तरह रज़ा-ए-इलाही में शहीद हुए । कहीं हबीब इब्न मज़ाहिर और हुर्र बनाकर करबला में आले मुहम्मद पर जान लूटाने आए तो कहीं इल्म के मैदान में इमाम निसाई, इमाम हाकिम, इमाम बुख़ारी, इमाम अबू हनीफ़ा, इमाम शाफीई

बनकर आए तो कहीं दीन की तबलीग़ में ख़्वाजा गरीब नवाज़, निजामुद्दीन औलिया, वारिसे पाक, मख़्दुम माहिम और मख़्दुम जलालुद्दीन जहाँगश्त बनकर आए। वक़्तन फ वक़्तन हर मैदान में गुलामानें अहले बैत नासबिय्यत व ख़ारजिय्यत के मुकाबले में आतें रहें, अपनी ख़िदमात देतें रहें और अपनी जानें भी कुर्बान करते रहें।

इस ज़माने में भी नासबिय्यत और ख़ारजिय्यत तमाम फिर्क़ो में अपना सर उठा रही है बल्कि कहेना चाहुँगा उरुज़ पर पहुँच रही है, फर्क सिर्फ इतना है जो नासबिय्यत की ड़ोर कल सल्तनत के बादशाहों ने अपनी बादशाहत की लालच में संभाली थी और उलमा-मुहद्दिषीन की गरदनों पर तलवारें रखकर लोगों से फज़ाइले अहले बैत छुपाकर, बुग्ज़े अहले बैत को आम करवा रहे थे वो ही नासबिय्यत की बागडोर आज कल कुछ फिर्कापरस्त नाम निहाद पीर, उलमा व कुछ तन्ज़ीमों नें संभाल ली है। कल के उलमा मजबूरी में औलाद व जान-माल के डर से फज़ाइले अहले बैत छुपा रहे थे और उनके बुग्ज़ में कुछ ने तो मौज़ूअ अहादीष तक घडनी शुरु कर दी थी, तो आज भी ऐसा ही हो रहा है फर्क सिर्फ इतना है आज के इस **Democracy** (जम्हूरियत) के ज़माने में उलमा की जान को या माल व औलाद को तो ख़तरा नहीं है मगर दुन्यवी लालच चाहे वो शोहरत पाने की हो या दौलत की हो , या चन्द फित्नापरस्त लोगों को ख़ुश करने के लिए हो, इसी वजह से आज के उलमा की एक जमाअत फज़ाइले अहले बैत नहीं बता रही है बल्कि अवाम को क़ुर्आन व अहले बैत से दूर किया जा रहा है। क़ुर्आन के तर्जुमे व तफसीर से उम्मत को दूर किया जा रहा है और मुहब्बते अहले बैत पर शिया-राफ़ज़ी के फ़तवे लगाये जा रहे है, जबकि मुतवातिर ह़दीषे ग़दीर से रसूलुल्लाह का कौल षाबित है कि नबीए करीम ने फ़रमाया :

“मैं जिसका मौला हूँ अ़ली भी उसके मौला है”

(अल मुजमुलकबीर, लि-तबरानी)

मुख्तसर हदीस :

“हो सकता है कि मुझे बुलाया जाए तो मैं कुबूल करुं, मैं तुम्हारे दरमियान दो भारी (अज़ीम) चीज़ें छोड़ कर जा रहा हूँ, इनमें से एक दूसरे से बढकर है, एक अल्लाह ﷻ की किताब और दूसरे मेरी इतरत या’नी मेरे अह्ले बैत ؑ, तो तुम सोच लो कि इन दोनों के बारे में मेरी कैसी जाँनशीनी करोगे, ये दोनों आपसमें जुदा नही होंगे ता आँ कि हौज़ पर आकर मुझ से मिले ।”

(इमाम निसाई की ख़सा‌इस अमीरुल मु’मिनीन अ़ली बिन अबी तालिब ؓ)

अब कारिइन आपको सोचना है कि हमारे नबी ﷺ तो हमे क़ुर्आन और अह्ले बैत ؑ से वाबस्तगी का हुक्म दे रहे है और नाम निहाद पीर व उलमा व कुछ तन्ज़ीमों की एक जमाअत फिर्कापरस्ती फैलाकर इनसे अवाम को दूर रखने का काम अन्जाम दे रहे है । आज माहौल ये बनाया जा रहा है कि जो अह्ले बैत ؑ से मुहब्बत करे उसे शिया, राफ़ज़ी जैसे अल्फाज़ो से उसे नवाज़ा जाता है, बेचारी अवाम को ये तक बताया नहीं जाता की सिर्फ मुहब्बत व फज़ीलते अह्ले बैत ؑ से कोई राफ़ज़ी नहीं बनता बल्कि जो सहाबाए किराम की शानमें लान व तान करता है उसे राफ़ज़ी कहा जाता है । मैं इस बात पर ज़्यादा लिखकर अपनी बात को तवील नहीं करना चाहता जो हक था वो बयान करने की कोशिश की है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत दे आमीन....

अल्लाह ﷻ रब्बुल इ़ज़्ज़त से दुआ है कि मेरी इस काविश को क़ुबूल फरमाये और मेरी इस किताबचे की किताबत व ईशाअत का सवाब तमाम उम्मते रसूलुल्लाह ﷺ के मोमिन व मोमिनात की रुहो को व मेरी नानी मोहतरमा मरहुमा ज़ुबैदाख़ातुन बिन्ते हुसैनमियाँ चौहाण की जिन्हों ने मुझे बचपन से मुहब्बते अह्ले बैत ؑ शिखायी, उनकी रुह को अता फ़रमाये और उनकी मग़फिरत फ़रमाये, सय्यिदा

ज़हराए पाक ﷺ के सदके उनके गुनाहों को बख़्श दे और उनको सय्यिदा जहराए पाक की कनीज़ों में शुमार करें। आमीन....

इस काम में हौंसला अफज़ाई करने वाले **"खतीबे अह्ले बैत ﷺ मुफ्ती शफ़ीक़ हनफ़ी क़ादरी साहब (मुम्बई)" का तहे दिल से शुक्रगुजद़ार हूँ और जब भी किताब में किसी अरबी या उर्दू अल्फ़ाजद़ के हिन्दी-गुजराती मअना में Confuse हुआ हूँ तब तब मेरी मदद पर हर वक्त आमदा रहने वाले "दीवान मोहसीनशाह (सांसरोद,गुजरात)"** का भी शुक्रगुज़ार हूँ।

अल्लाह ﷻ ! से दुआ है मेरी इस हक़ीर सी काविश को कुबूल फ़रमाए और मुझे रसूलुल्लाह ﷺ व अह्ले बैत ﷺ की शफाअत नसीब फरमाए ! आमीन

डॉ. शहज़ादहुसैन यासीनमियां क़ाज़ी
1 मुहर्रम, हिजरी सन **1441**
(**1** सप्टेम्बर, **2019**)

Second Edition
1 मुहर्रम, हिजरी सन **1442**
(**1** अगस्त, **2020**)

फेहरिस्त

मुहर्रम : इस्लामी नए साल का आगाज़

* इस्लाम एक वाहिद मज़हब है जिसके साल का आगाज़ भी कुरबानी से और इख़्तेताम भी कुरबानी पर। इसी लिए इस्लाम की 1400 साल की तारिख़ में दुसरे मज़हबो की तरह नए साल की ख़ुशियां न मना कर माहे मुहर्रम में 'ग़मे हुसैन ﷺ' मनाया जाता है। मगर सद अफसोस पिछले कुछ 4-5 सालों से मुहर्रम के चांद के साथ ही नए साल की ख़ुशियां व मुबारक़बादी का एक नया रिवाज इजाद किया गया है। **तअ़ज्जुब की बात तो ये है की इस पर अह्ले इल्म भी अमल कर रहे है !**
* बेशक नए साल की ख़ुशियां या मुबारकबादी में शरीयतन कोइ हर्ज नही है, ना हि हराम है। मगर **'मस्लके अह्ले सुन्नत'** का अकीदा रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत, मुहब्बत, निस्बत व मवद्दत पर मबनी है। 'अह्ले सुन्नत की तो बुनियाद ही निस्बत है।' अह्ले सुन्नत के अकाईद की बुनियाद में रसूलुल्लाह ﷺ की निस्बत है, अह्ले बैत की निस्बत है। ख़ुल्फाए राशिदीन ﷺ की निस्बत है। कुतबुल अक़ताब सय्यिदना अब्दुल क़ादिर जिलानी ﷺ व सुल्तानुलहिन्द ख्वाजाए ख्वाजगान गरीब नवाज़ ﷺ व दीगर औलिया-मसाइख़ की निस्बत है।
* लफ्ज़ 'निस्बत' या'नी Relationship (रिलेशनशीप) या 'तअ़ाल्लुक' या 'संबंध'। हमारी रसूलुल्लाह ﷺ के साथ निस्बत है की हम आप ﷺ के उम्मती है, उनका कलमा पढ़नेवाले है। कल रोज़े क़यामत उनकी शफाअत के तलबगार है। बतौर निस्बते रसूलुल्लाह ﷺ के और एक उम्मती जो आशीके रसूल ﷺ होने का भी दावा करे तो उस पर वाजिब है की, ***"जब रसूलुल्लाह ﷺ खुश तो उम्मती भी खुश, और जब रसूलुल्लाह ﷺ ग़मगीन तो उम्मती भी ग़मगीन"*** ।

* मुहर्रम के 10 दिनों में हमारे आका व मौला सय्यिदना मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह ﷺ की अह्ले बैत पर करबला में कैसा ज़ुल्म हुआ वो तो तफ़सील से इस परचे में बयान नही हो सकता और ना ही कोई उम्मती इससे अंजान है । नवासए रसूल ﷺ जन्नत के जवानों के सरदार सय्यिदना इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत व सर को नेज़े पर चढाना, तीन दिन की अह्ले बैत की औरतों, बच्चों और मर्दों की भूख व प्यास, अ़ली अकबर व क़ासिम رضي الله عنهما जैसे जवानों की बिना सर की ज़ख्मी लाशे, औ़न व मुहम्मद رضي الله عنهما जैसे 8-10 की साल के बच्चों के कटे हुवे सर, मासूम अ़ली असगर رضي الله عنه का छिदा हुआ गला, 5 साल की सय्यिदा सुक़ैना बिन्ते हुसैन رضي الله عنها के कानों की बालियां खिंचकर लहुलुहान करना... कलम लिखने से कांपती है....ऐसे ज़ुल्म ढाए गए ।
* सय्यिदना इमाम हुसैन رضي الله عنه ने ये क़ुरबानी अपने नानाजान ﷺ की उम्मत की इस्लाह की ख़ातिर व ज़ुल्म के खिलाफ हक़ की आवाज़ बुलन्द करने के लिए दी । मगर अफसोस सद अफसोस... आज उम्मत ग़मे हुसैन رضي الله عنه भूलकर मुबारकबादी दे रही है और खुशीयां मना रही है और इसके शरई तौर पर जाइज़ होने का जवाज़ ढुंढकर फतवे दे रही है ।

1400 साल बाद भी 'ग़मे हुसैन' क्यूं मनाया जाए ?

* हां, आज इन वाकेआ़त को 1400 साल हो गए है तो अब 'ग़म' क्यूं मनाया जाए ? तवारिख़ की किताबों में से कई हस्तियां, कई जंगी दास्तानें और कई वाकेआ़त मिट गए । मगर वाकेआ़ करबला आज भी 'ग़मे हुसैन ' में ज़िन्दा है । क्यूंके नस्ले इन्सानी की तारिख़ में हज़रते आदम से लेकर हज़रत इसा तक कमोबेश 1,23,999 अम्बियाए किराम में से किसी नबी के घरवालों पर ऐसा जुल्म नहीं किया गया, जो करबला में सरवरें अम्बिया, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह के नवासे व अह्ले बैत पर रसूल का ही कलमा पढनेवालों ने किया । 78 सरों को नेज़ों पर महीनों तक घुमाया गया ।
और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए के वाकेआ करबला अभी हुआ भी नही, अभी तो इमाम हुसैन रसूलुल्लाह की गोद में खेल रहे है की फरिश्ते आकर रसूलुल्लाह को शहादते हुसैन के ख़बर सुनाए और हमारे आका ग़मगीन होकर रोने लगे ।
* और वोह ग़म क्यूं न मनाया जाए के हमारे मदीनेवाले प्यारे आका, मुहम्मदूर्रसूलुल्लाह ने इस दुनिया से परदा फ़रमा लिया हो, बावजूद इसके हि.स. 61 में 10 मुहर्रम को वाकेआ करबला हो और सय्यिदना इमाम हुसैन शहीद हो तो उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा व सहाबीए रसूल सय्यिदना इब्ने अब्बास को उसी वक्त 10 मुहर्रम को ख़्वाब में हमारे आका मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह गुबार आलुद बाल-दाढी के साथ ग़मगीन हालत में शहादते हुसैन पर ग़म का ईज़हार करे ।
* अय उम्मते रसूलुल्लाह ! अय आशिक़ाने रसूलुल्लाह ! अय लब्बैक या रसूलुल्लाह का दम भरनेवालों... ज़रा सोचो कितना गहरा सदमा व ग़म हुआ होगा हमारे नबी रसूलुल्लाह को ।

* तअ़ज्जुब है, आका रसूलुल्लाह ﷺ जिस अशराह में इतने ग़मगीन हुए उन दिनों में उनकी उम्मत खुशियां मनाने के लिए या मुबारक़बादी की शरई दलील ढूंढ रही है, क्या यही है निस्बते रसूलुल्लाह ﷺ ??? क्या यही वफादारी है अह्ले बैत ﷺ के साथ ???

हमने इस किताब में 'ग़मे हुसैन ؓ' में ग़मगीन होना और रोकर आंसू बहाने पर रसूलुल्लाह ﷺ की अहादीषे मुबारक़ा पेश की है और 1400 साल से अह्ले सुन्नत के मुहद्दिषीन व सुफियाए किराम व उलमाए किराम व मशायख़ीने उजाम का क्या तरीका रहा है इसको ब-हवाला कुतुबे अह्ले सुन्नत से पेश करने की काविश की है जिसे अल्लाह ﷻ कुबुल फ़रमाए और हम सब को इस पर अमल करने की तौफीक अता फ़रमाए । आमीन...

शहादते हुसैन से पहले रसूलुल्लाह का ग़मे हुसैन رضي الله عنه

(1) - عن عبد الله بن نجي عن أبيه : انه سار مع على رضى الله عنه وكان صاحب مطهرته فلما حاذى نينوى وهو منطلق إلى صفين فنادى على رضى الله عنه اصبر أبا عبد الله اصبر أبا عبد الله بشط الفرات قلت وماذا قال دخلت على النبي صلى الله عليه و سلم ذات يوم وعيناه تفيضان قلت يا نبي الله أغضبك أحد ما شأن عينيك تفيضان قال بل قام من عندى جبريل قبل فحدثني ان الحسين يقتل بشط الفرات قال فقال هل لك إلى ان أشمك من تربته قال قلت نعم فمد يده فقبض قبضة من تراب فأعطانيها فلم أملك عيني أن فاضتا

[مُسند احمد : 648 (85/1) ، قال الشيخ زبير عليزئی في فضائل الصحابة : إسناده صحيح ، السلسلة الصحيحة : 822 ، قال الشيخ الألباني : إسناده صحيح]

[المُستدرک للحاکم : 4884 ، السلسلة الصحيحة : 374 ، قال الامام حاکم و الشيخ الألباني : إسناده صحيح]

(1) मुस्नद अहमद की हदीस में है : सय्यिदना अबू अब्दुल्लाह ताबई رحمة الله عليه के बेटे सय्यिदना अब्दुल्लाह बिन नज्जा رحمة الله عليه अपने वालिद से बयान करते है जो सय्यिदना अ़ली बिन अबु तालिब رضي الله عنه के लिए (सफर में) सामाने तहारत का बंदोबस्त करते थे के वो सय्यिदना अ़ली बिन अबू तालिब رضي الله عنه के साथ सफर में थे, जब आप सिफ्फीन को जाते हुए (मक़ाम) नैनवा के बराबर पहुंचे तो आप رضي الله عنه ने बुलंद आवाज़ से कहा: "ऐ अबू अब्दुल्लाह ! (ये सय्यिदना हुसैन बिन अ़ली رضي الله عنه की कुनियत थी) फरात के किनारे सब्र करना, ऐ अबू अब्दुल्लाह ! फरात के किनारे सब्र करना, "मैंने पूछा: ''क्या (ख़ास) बात हो गई (ऐ अमीरुल मु'मिनीन) ?" सय्यिदना अ़ली बिन अबू तालिब رضي الله عنه ने फ़रमाया: "एक दिन रसूलुल्लाह ﷺ के पास हाज़िर हुआ, तो (क्या देखता हूं के) आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू रवां थे, मैंने (बेचैन होकर) अर्ज़ किया: "क्या आप को किसीने नाराज़ किया है ? आप ﷺ की मुबारक आंखों से आंसू क्यूं बह रहे है ?" रसूलुल्लाह ﷺ ने ईरशाद फ़रमाया: "नहीं । बल्कि अभी अभी सय्यिदना जिब्रईल عليه السلام मेरे पास से उठ कर गए है और उन्होंने पूछा के क्या में आप ﷺ को हुसैन رضي الله عنه के मकतल की मिट्टी लाकर दिखाउं ?" मैंने कहा ''हां दिखाओ ! चुनांचे उन्होंने मिट्टी की एक मुट्ठी भर कर मुझे दी, तो इस पर मैं अपने आंसू ना रोक सका ।"

(मुस्नद अहमद:648, अल मुस्तदरकलिल हाकिम :4884) (शैख़ अल्बानी आर शैख़ जुबेर अ़ली ज़ई ने हदीष की सनद को सहीह कहा है ।)

* इमाम हाकिम नीशापुरी رحمۃ اللہ علیہ 'अल मुस्तदरक अला सहीहैन' में "अबू अब्दुल्लाह हुसैन बिन अली अश्शहीद इब्ने फ़ातिमा बिन्त रसूलुल्लाह ﷺ के फ़ज़ाइल" के बाब में सबसे पेहले हुज़ूर नबीए करीम ﷺ के ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ में रोने वाली हदीष लाए है ।

اَوَّلُ فَضَائِلِ اَبِی عَبْدِ اللّٰہِ الْحُسَیْنِ بْنِ عَلِیٍّ الشَّہِیْدُ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا بْنِ فَاطِمَۃَ بِنْتِ رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ وَعَلٰی آلِہٖ

ابوعبداللہ حسین بن علی الشھید ابن فاطمہ بنت رسول اللہ ﷺ کے فضائل

(2) 4818۔ اَخْبَرَنَا اَبُو عَبْدِ اللّٰہِ مُحَمَّدُ بْنُ عَلِیٍّ الْجَوْہَرِیُّ بِبَغْدَادَ، حَدَّثَنَا اَبُو الْاَحْوَصِ مُحَمَّدُ بْنُ الْہَیْثَمِ الْقَاضِیّ، حَدَّثَنَا مُحَمَّدُ بْنُ مُصْعَبٍ، حَدَّثَنَا الْاَوْزَاعِیُّ، عَنْ اَبِی عَمَّارٍ شَدَّادُ بْنُ عَبْدِ اللّٰہِ، عَنْ اُمِّ الْفَضْلِ بِنْتِ الْحَارِثِ، اَنَّہَا دَخَلَتْ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ، فَقَالَتْ: یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ، اِنِّی رَاَیْتُ حُلْمًا مُنْكَرًا اللَّیْلَۃَ، قَالَ: مَا ہُوَ؟ قَالَتْ: اِنَّہٗ شَدِیْدٌ، قَالَ: وَمَا ہُوَ؟ قَالَتْ: رَاَیْتُ کَاَنَّ قِطْعَۃً مِّنْ جَسَدِکَ قُطِعَتْ وَوُضِعَتْ فِی حِجْرِی، فَقَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ: رَاَیْتِ خَیْرًا، تَلِدُ فَاطِمَۃُ اِنْ شَاءَ اللّٰہُ غُلَامًا، فَیَکُوْنُ فِی حِجْرِکِ، فَوَلَدَتْ فَاطِمَۃُ الْحُسَیْنَ فَکَانَ فِی حِجْرِی کَمَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ، فَدَخَلْتُ یَوْمًا اِلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ فَوَضَعْتُہٗ فِی حِجْرِہٖ، ثُمَّ حَانَتْ مِنِّی الْتِفَاتَۃٌ، فَاِذَا عَیْنَا رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ تُہْرِیْقَانِ مِنَ الدُّمُوْعِ، قَالَتْ: فَقُلْتُ: یَا نَبِیَّ اللّٰہِ، بِاَبِی اَنْتَ وَاُمِّی مَا لَکَ؟ قَالَ: اَتَانِی جِبْرِیْلُ عَلَیْہِ الصَّلَاۃُ وَالسَّلَامُ، فَاَخْبَرَنِی اَنَّ اُمَّتِی سَتَقْتُلُ ابْنِی ہٰذَا، فَقُلْتُ: ہٰذَا؟ فَقَالَ: نَعَمْ، وَاَتَانِی بِتُرْبَۃٍ مِنْ تُرْبَتِہٖ حَمْرَاءَ

ہٰذَا حَدِیْثٌ صَحِیْحٌ عَلٰی شَرْطِ الشَّیْخَیْنِ، وَلَمْ یُخَرِّجَاہُ

(2) “शद्दाद बिन अब्दुल्लाह उम्मे फज़ल बिन ह़ारिष से रिवायत करते हैं, वोह रसूल ﷺ की खिदमत में ह़ाज़िर हुए और अर्ज़ किया : “अय अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! मैंने आज रात एक ना पसंदीदा ख्वाब देखा है ।” आप ﷺ ने पुछा के “वोह ख्वाब क्या है ।” उन्होंने कहा के ‘‘बहुत ना पसंदीदा ख्वाब देखा है ।’’ आप ﷺ ने पुछा के ‘‘कौनसा ख्वाब है ?’’ उन्होंने बताया के‘‘मैंने देखा के आप के जिस्मे अत्हर का एक टुकड़ा कट कर मेरी गोद में आ गिरा है ।” आप ﷺ ने फ़रमाया : “येह एक अच्छा ख्वाब है । فاطمہ फ़ातिमा عليها السلام के यहां एक बेटा पैदा होगा जो तुम्हारी गोद में होगा ।’’ चुनांचे फातिमा عليها السلام के यहां सय्यिदना हुसैन رضي الله عنه की विलादत हुई और रसूलुल्लाह ﷺ की पेशींगोई के मुताबिक वोह मेरी गोद में आए । मेरी तवज्जोह जरा हटी तो **मैंने देखा कि नबी ﷺ की दोनों आंखों से आंसु जारी हैं ।** मैंने अ़र्ज़ किया : “अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप को क्या हुवा है ?” आप ﷺ ने जवाब दिया : “मेरे पास जिब्रईल عليه السلام आए थे और मुझे येह खबर दी है कि आप की उम्मत आप के इस नवासे को अ़नक़रीब क़त्ल कर देगी । ”

मैंने अ़र्ज़ किया : “क्या ऐसा होगा ?” आप ﷺ ने फ़रमाया : “हां। ऐसा ही होगा, मेरे पास वोह उस सरज़मीन की सुर्ख़ मिट्टी भी लाए थे जहां वोह शहीद किये जाएंगे।”

(अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 3:176। इमाम हाकिम केहते हैं : येह ह़दीष शैख़ेन की शर्त के मुताबिक सहीह है। लेकीन दोनों ने इसकी तख़रीज नहीं की है। इमाम बैहक़ी ने इस रिवायत को दलाइलुन नुबुव्वह 6:468-469 में इमाम हाकिम की सनद से रिवायत किया है। ख़वारिज़्मी, मक्तलल हुसैन 1:232, तारीख़े दमिश्क़, 14:196, अल बिदाया वन्निहाया 6:258)

(3) الامام السجاد عليه السلام عن أسماء بنت عميس :

عن علی بن الحسين عليهما السلام ، قال : حدثتنی أسما بنت عميس ، قالت :

" قبلت جدتک فاطمة عليها السلام بالحسن و الحسين عليهما السلام ..... فلما كان بعد حول من مولد الحسن عليه السلام ولدت الحسين عليه السلام فجاء نی النبی ﷺ فقال: يا أسماء هاتی ابنی ، فدفعته اليه فی خرقة بيضاء ، فاذن فی أذنه اليمنی وأقام فی اليسری ، ثم وضعه فی حجره وبكی.

قالت أسماء: فقلت : فداک أبی وأمی ، مم بكاؤک ؟ ! قال : علی ابنی هذا ، قلت : انه ولد الساعة ، قال : يا أسماء ، تقتله الفئة الباغية لا أنالهم الله شفاعتی ، ثم قال : يا أسماء، لا تخبری فاطمة بهذا فانها قريبة عهد بولادته ....“

(3) इमाम सज्जाद عليه السلام हज़रत अस्मा बिन्ते उ़मैस رضي الله عنها से :

“अ़ली बिन हुसैन رضي الله عنه बयान करते हैं मुझ से अस्मा बिन्ते उ़मैस رضي الله عنها ने बयान किया के तुम्हारी फूफी ने सय्यिदना हसन और हुसैन عليهما السلام की विलादत पर फ़ातिमा عليها السلام को बोसा दिया। सय्यिदना हसन رضي الله عنه की विलादत के एक साल बा’द जब सय्यिदना हुसैन पैदा हुवे तो नबी ﷺ मेरे पास आए और फ़रमाया : “अस्मा ! मेरे बेटे को मुझे दो।” मैंने एक सुफैद कपड़े में लपेट कर उन्हें आप के हवाले कर दिया।

आप ने उन के दाहिने कान में अज़ान और बाएं में तकबीर कही **और अपनी गोद में लिये हुए रोने लगे** । अस्मा ﷺ बयान करती हैं के, मैंने अ़र्ज़ किया : "मेरे मां-बाप आप पर कुरबान ! आप रोते क्यों हैं ?" फ़रमाया : "अपने इस बेटे पर रो रहा हूं ।" मैंने कहा : "येह तो अभी अभी तवल्लुद (पैदा) हुए हैं ।" आप ﷺ ने फ़रमाया : अस्मा ! मेरे इस बेटे को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा, अल्लाह ﷻ उसे मेरी शफाअ़त नहीं पहूंचने देगा ।" इस के बा'द आप ﷺ ने कहा : "अस्मा ! इस बात की ख़बर फातिमा को न देना क्यूं के अभी तो उन के यहां बच्चे की विलादत हुई है ।"

(मक़्तलल इमामुल हुसैन ﷺ अल ख़्वारिज़्मी 1:165-137 । ज़ख़ाइरुल उ़क़्बा : 120, और उन्हों ने कहा है के इस रिवायत को इमाम अ़ली बिन मूसा रज़ा ﷺ ने बयान किया है ।)

(4) مولی لزینب ، عن زینب بنت جحش :

عن زینب بنت جحش ، قالت

" بینـا رسـول الله ﷺ فی بیتی وحسینؑ عندی حین درج ، فغفلت عنه، فدخل رسول الله ﷺ فجلس علی بطنه ، قالت : فانطلقت لآخذه فاستیقظ رسول اللـه ﷺ فـقـال: دعیه ، فترکته حتی فرغ (من بوله) ، ثم دعا بماء فقال : انه یصب من الغلام ویغسل من الجاریة ، فصبوا صبا ، ثم توضا ثم قام احتضنه الیه ، فاذا رکع أو جلس وضعه ، ثم جلس فبکی ، ثم مد یده ، فقلت حین قضی الصلاة : یا رسول الله، انی رأیتک الیوم صنعت شیئا ما رأیتک تصنعه !! قال: ان جبرئیل أتانی فأخبرنی أن هذا تقتله امتی. فقلت: أرنی ، فأرانی تربة حمراء".

(4) उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा "ज़ैनब ﷺ के ग़ुलाम, ज़ैनब बिन्ते जहश ﷺ से रिवायत करते है के सय्यिदा जैनब ﷺ बयान करती हैं :

रसूलुल्लाह ﷺ मेरे घर में इस्तराहत (आराम) फ़रमा रहे थे, हज़रत हुसैन ﷺ आए और मेरे पास रहे । मैं ज़रा ग़ाफिल हुई तो वोह रसूलुल्लाह ﷺ के पास जा पहूंचे और आप के बतन मुबारक पर बैठ गए । मैं उन को उठाने के लिए लपकी तो आप ﷺ की आंख खुल गई, आप ﷺ ने फ़रमाया : 'उन्हें छोड़ दो ।' मैंने छोड़ दिया । हुसैन ﷺ ने आप ﷺ के कपड़ों पर पेशाब कर दिया । जब वोह पेशाब से फारिग़ हुए तो आप ﷺ ने पानी मंगाया और फ़रमाया : "बेटे के पेशाब पर पानी डाला जाता है और बेटी के पेशाब को धुला जाता है ।" उन्हों ने आप ﷺ के कपड़ों पर पानी डाला ।

आप ﷺ ने इस के बा'द वुज़ू किया और उन्हें गोद में ले कर नमाज़ पढ़ने खड़े हो गए। जब आप ﷺ रुकुअ़ में या जल्से में जाते तो उन्हें ज़मीन पर रख देते। **फिर आप ﷺ जब नमाज़ में बैठे तो रोने लगे।** फिर आप ﷺ ने हाथ फैलाए। जब आप ﷺ नमाज़ से फारिग हुए तो मैंने अर्ज़ किया : अय अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! मैने आप को आज एक ऐसा काम करते देखा के उस से पेहले इस तरह का काम नहीं देखा था। आप ﷺ ने फ़रमाया : "मेरे पास जिब्रईल عليه السلام आए थे और मुझे येह खबर दी कि हुसैन رضي الله عنه को आप की उम्मत क़त्ल कर देगी।" मैंने कहा : "ज़रा मुझे दिखाओ तो उन्हों ने मुझे खून से हुई सुर्ख मिट्टी दिखाई।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 24:54-55 / ह. 141, 24:57 / ह. 147, अल मतालिबुल आ़लिया लि इब्ने ह़जर 2:87 / ह. 12, मजमउ़ज़ ज़वाइद 1:285, मुसन्नफ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ 1:381-382 / ह. 1491, कन्जुल उ़म्माल 9:525 / नंबर 27268)

(5) عن أبي الطفيل:

عن أبي الطفيل ، قال:

" استأذن ملك القطر أن يسلم على النبي ﷺ في بيت ام سلمة ، فقال : لا يدخل علينا أحد، فجاء الحسين عليه السلام فدخل، فقالت أم سلمة : هو الحسين، فقال النبي ﷺ دعيه، فجعل يعلو رقبة النبي ﷺ ويعبث به والملك ينظر ، فقال الملك : أتحبه يا محمد؟ قال: اى والله انى لاحبه ، قال : أما ان أمتك ستقتله ، وان شئت أريتك المكان، فقال بيده فتناول كفا من تراب ، فأخذت أم سلمة التراب فصرته في خمارها، فكانوا يرون أن ذلك التراب من كربلاء".

(5) "अबू तुफैल से रिवायत है :

अबू तुफैल से रिवायत है, वोह बयान करते हैं के नबीए अकरम ﷺ जिस वक़्त सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها के घर में थे, बारिश के फरिश्ते ने आप ﷺ को सलाम करने की इजाज़त तलब की। आप ﷺ ने फ़रमाया : देखो कोई दरवाज़े से अन्दर दाखिल ना हो। इतने में सय्यिदना हुसैन عليه السلام आ गए और घर में दाखिल हो गए। उम्मे सलमा رضي الله عنها ने कहा : वोह हुसैन हैं। नबीए अकरम ﷺ ने फ़रमाया : "उन्हें छोड़ दो आने

दो।” सय्यिदना हुसैन ﷺ नबी ﷺ की गरदन पर सवार हो गए और आप ﷺ से खेलने लगे । येह सारा मंज़र फरिश्ता देख रहा था । उसने पूछा “ऐ मुहम्मद ﷺ ! क्या आप इन से मुहब्बत करते हैं ?” आप ﷺ ने फ़रमाया : “अल्लाह ﷻ की कसम ! मैं इन से मुहब्बत करता हूं।” लेकिन आप की उम्मत तो इन्हें कत्ल कर देगी । अगर चाहें तो मैं आप को इन की जाए शहादत दिखा दूं । फिर उन्हों ने हाथ बढा कर एक मुट्ठी मिट्टी दिखाई, जिसे उम्मे सलमा ﷺ ने अपने दुपट्टे में रख लिया । लोगों ने बा'द में देखा तो उन का कहना था के येह मिट्टी सरज़मीने करबला की ही है ।” इसे इमाम तबरानी ने रिवायत किया है और इस की सनद हसन है ।

(मजमउल-ज़वाइद 9:190, फैज़ुल क़दीर शरह अल जामेउस्सग़ीर 1:266)

(6) ابوغالب عن أبی أمامة الباهلی:

عن أبی أمامة الباهلی،قال:

قال رسول الله ﷺ لنسائه: لاتبكوا هذاالصبی يعنی حسيناً،قال: وكان يوم ام سلمة،فنزل جبريل عليه السلام ،فدخل رسول الله ﷺ الداخل وقال لأم سلمة: لاتدعی احداً يدخل علی،فجاء الحسين عليه السلام ، فلمانظر الی النبی ﷺ فی البيت أراد أن يدخل،فأخذته ام سلمة فاحتضنته وجعلت تناغيه وتسكنه ، فلمااشتد علی البكاء خلت عنه ،فدخل حتی جلس فی حجر النبی ﷺ ، فقال: جبريل عليه السلام للنبی ﷺ ان أمتک ستقتل ابنک هذا. فقال النبی ﷺ يقتلونه وهم مؤمنون بی؟قال :نعم يقتلونه .فتناول جبريل عليه السلام تربة فقال: مكان كذا وكذا.فخرج رسول الله ﷺ وقد احتضن حسيناً كاسف البال مهموماً،فظنت ام سلمة انه غضب من دخول الصبی عليه،فقالت: يا نبی الله! جعلت لک الفداانک قلت لنا : لاتبكوا هذاالصبی وأمرتنی أن لاأدع أحداً يدخل عليک،فجاء فخليت عنه ،فلم يرد عليها ،فخرج الی أصحابه وهم جلوس،فقال لهم: ان أمتی يقتلون هذا،وفی القوم ابوبكر،وعمر وكانا أجرأ القوم عليه فقالا:يانبی الله ،يقتلونه وهم مؤمنون.قال :نعم هذه تربته ، فأراهم اياها.قال الذهبی والمناوی :اسناده حسن.

(6) अबू गालिब हज़रत अबू उमामह बाहली से रिवायत करते है :

"अबू उमामह बाहली ﷺ बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने अपनी अज़वाजे मुतह्हरात से फ़रमाया के **'इस बच्चे या'नी हुसैन ﷺ को ना रूलाओ ।'** रावी का बयान है के उस दिन आप ﷺ सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ के घर थे जिब्रईल ﷺ तशरीफ लाए रसूलुल्लाह ﷺ घर में दाखिल हुए और उम्मे सय्यिदना सलमा ﷺ से कहा के देखो किसी को घर में दाखिल होने मत देना । इतने में सय्यिदना हुसैन ﷺ आ गए और जब उन्होंने नबी ﷺ को अन्दर देखा तो आप ﷺ के पास जाने का इरादा किया । उम्मे सलमा ﷺ ने उन्हें गोद में ले लिया और उन को बेहलाने लगीं । लेकिन जब उन का रोना नहीं थमा तो उन को छोड़ दिया । वोह घर में दाखिल हो गए और जा कर नबी ﷺ की गोद में बैठ गए । जिब्रईल ﷺ ने नबी ﷺ से कहा : "आप की उम्मत आप के इस बेटे को क़त्ल कर देगी ।" नबी ﷺ ने तअज्जुब से पूछा के "क्या वोह मुझ पर इमान रखते हुए इन्हें क़त्ल कर देंगे ?" जिब्रईल ﷺ ने जवाब दिया के "हां वोह उन्हें क़त्ल कर देंगे ।" फिर जिब्रईल ﷺ ने एक मुट्ठी मिट्टी हाथ बढा कर दिखाई और कहा येह फलां जगह की है । **येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ सय्यिदना हुसैन ﷺ को पेहलु में दबाए ग़मों से निढाल हो कर बाहर आए ।** सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ ने समझा के शायद बच्चे के अन्दर दाखिल होने की वजह से आप नाराज़ हैं । उन्हों ने अ़र्ज़ किया : ऐ अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! आप पर मेरी जान कुरबान ! आप ﷺ ने फ़रमाया था कि उस बच्चे को रुलाओ नहीं और आप ﷺ ने मुझे येह भी हुक्म दिया था कि मैं किसी को अन्दर न जाने दूं । सय्यिदना हुसैन ﷺ जब आए तो मैंने उन का रास्ता नहीं रोका । इस पर आप ﷺ ने कोई जवाब नहीं दिया और आप ﷺ बाहर निकल कर अपने अस्हाब के पास आए जहां वोह बैठे हुए थे । आप ﷺ ने उन से कहा : "मेरी उम्मत इस बच्चे को क़त्ल कर देगी ।" मजलिस में उस वक़्त सय्यिदना अबू बकर, सय्यिदना उ़मर ﷺ भी मौजुद थे। दोनों आप ﷺ से बात चीत करने की हिम्मत जुटा लिया करते थे । उन दोनों हज़रात ने पुछा : "अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! क्या वोह मोमीन रहेते हुए इसे क़त्ल कर देंगे ।" आप ﷺ ने फ़रमाया : "हां । येह उस सरज़मीन की मिट्टी है ।" इस के बा'द आप ﷺ ने उन सब लोगों को मिट्टी दिखाई" इमाम ज़हबी ﷺ और मनादी ﷺ ने इस हदीष को हसन कहा है।

(अल मुअजमुल कबीर 8:258, मजमउझ्ज़वाईद 9:189, इस को तबरानी ने भी रिवायत किया है, इस के रिजाल षिक़ा हैं अलबत्त कुछ में ज़ुअफ़ (ज़ो'फ़) है, तारीखे दमिश्क 14:190, सियरे अ़अ़लामुन्नुबला 3:188-189, ज़हबी ने इस की सनद को हसन कहा है । अस्रौजुन्नज़ीर 1:13-14, केहते हैं के इस की सनद हसन हैं । इब्ने कषीर ने बिदाया वन्निहाया 8:218 में इस रिवायत की तरफ इशारा किया है ।)

(7) عن عبدالله بن عمرو بن العاص ،عن معاذ بن جبل:

عن معاذ بن جبل:

"خرج علينا رسول الله ﷺ متغير اللون فقال: أنا محمد أوتيت فواتح الكلم وخواتمه ،فأطيعوني مادمت بين أظهركم ،فاذا ذهب بي فعليكم بكتاب الله عزوجل احلوا حلاله وحرموا حرامه ، أتتكم الموتة، أتتكم بالروح والراحة ،كتاب من الله سبق، أتتكم فتن كقطع الليل المظلم،كلما ذهب رسل جاء رسل ،تناسخت النبوة فصارت ملكاً ،رحم الله من أخذها بحقها وخرج منها كما دخلها.

أمسك يا معاذ وأحص،قال :فلما بلغت خمسة قال:يزيد لابارك الله في يزيد،ثم ذرفت عيناه ﷺ ،ثم قال: نعي الى حسين،أتيت بتربته وأخبرت بقاتله ،والذي نفسي بيده لا يقتل بين ظهراني قوم لا يمنعونه الاخالف الله بين صدورهم وقلوبهم ،وسلط عليهم شرارهم وألبسهم شيعاً،ثم قال ﷺ:واهاً لفراخ آل محمد من خليفة مستخلف مترف ،يقتل خلفي ،وخالف الخلف .الحديث.

(7) "अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस رضي الله عنه की रिवायत मआज़ बिन जबल رضي الله عنه से :

सय्यिदना मआज़ बिन जबल رضي الله عنه बयान करते हैं के रसूलुल्लाह ﷺ हमारे पास इस हाल में तशरीफ लाए के आप ﷺ का रंग बदला हुआ था । आपने फ़रमाया : "मैं मुहम्मद ﷺ हूं, मुझे कलिमात की इब्तिदा और इन्तिहा अ़ता की गई है। जब तक तुम्हारे दरमियान रहूं मेरी इताअ़त करते रहो, जब यहां से मुझे बुला लिया जाए तो तुम अल्लाह عزوجل की किताब लाज़िम पकडो, इस के हलाल को हलाल और इस के हराम को हराम समझो, तुम्हे भी मौत आएगी, सुब्ह व शाम गुज़रेगी, सुकून व राहत आएगी, तक़दीर का फैसला हो चुका है । तुम्हारे उपर तारिक रात की तरह फित्नों का नुज़ूल होगा, जब जब नर्मी जाएगी दोबारा आ जाएगी ।

नुबुव्वत का सिलसिला ख़त्म हो जाएगा और बादशाहत आ जाएगी । अल्लाह ﷻ उस शख़्स पर रहम फ़रमाए जो इसका हक अदा करे और जिस तरह इस में दाख़िल हुआ था इसी तरह इस से बाहर निकल आए ।”,

“अय मआ़ज़ ﵁ ! ठहरो और शुमार करो । रावी का बयान है के शुमार करते हुए जब मआ़ज़ पांच की गिनती तक पहूंचे । आप ﷺ ने फ़रमाया : **“यज़ीद और यज़ीदीयों में अल्लाह बरकत न दे ।” फिर आप की आंखों से आंसू बहने लगे और आप ﷺ ने फ़रमाया :** “मुझे हुसैन ﵁ की शहादत की ख़बर दी गई है । मुझे उन की जाए शहादत की मिट्टी पैश की गई है और उन के क़ातिल के बारे में बताया गया है । क़सम है उस ज़ात की जिस के हाथ में मेरी जान है, जिस जमाअ़त के सामने हुसैन ﵁ शहीद किये जाएंगे और वोह इस से मनअ़ नहीं करेगी तो अल्लाह ﷻ उन के दिलों और सीनों में इख़्तिलाफ पैदा कर देगा। उस के बदतरीन लोगों को उस पर मुसल्लत कर देगा, उसे टुकडे टुकडे कर देगा ।” इस के बा’द आप ﷺ ने फ़रमाया : “अफसोस ! आले मुहम्मद ﵁ से ख़लीफा बनने वाले बच्चे को मेरे बा’द के लोग क़त्ल करेंगे ।”

(मुअ़जमुल कबीर 3:120 ह. 2461,20 ; 38-39, मक़्तलुल हुसैन लिल ख़्वारज़्मी 1:264, तबरानी की सनद से, कन्ज़ुल उम्माल 11:166 ह. 31061, तबरानी से, मजमउ़ज़्ज़वाइद 9:190)

(8) رجل من بنی اسد

عن العریان بن هیثم بن الاسود النخعی الکوفی الاعور ،قال:

”کان أبی یتبدی فینزل قریباً من الموضع الذی کان فیه معرکة الحسین علیه السلام،فکنا لانبدو الاوجدنا رجلاً من بنی أسد هناک،فقال له أبی:انی أراک ملازماً هذا المکان؟قال:بلغنی أن حسیناً یقتل ھاھنا،فأنا أخرج لعلی أصادفه فأقتل معه ،فلما قتل الحسین علیه السلام قال أبی : انطلقوا ننظر هل الأسدی فی من قتل؟ فأتینا المعرکة فطوفنا فاذا الأسدی مقتول.“

(8) “क़बीला बनू असद के एक शख़्स की रिवायत :

इर्यान बिन हैषम बिन असवद नख़ई कुफी अअ़-वर बयान करते है : मेरे वालिद एक दीहात में जाया करते थे जो उस जगह से क़रीब था जहां मा’रेका

हुसैन ﵁ बरपा हुआ था। हम जब भी उस दीहात में जाते क़बीला बनू असद के एक आदमी को वहां पाते थे। उस से मेरे वालिद ने पूछा : मैं देख़ता हूं के तुम इसी जगह को लाज़िम पकड़ कर बैठ गए हो। उस ने जवाब दिया के मुझे येह ख़बर मिली है के इसी जगह हुसैन ﵁ शहीद किये जाएंगे। मैं यहां इस लिये चल कर आता हूं ताके उन के साथ मिल जाउं और उन के साथ मैं भी शहीद किया जाउं। जब हुसैन ﵁ शहीद कर दिये गए तो मेरे वालिद ने कहा के चलकर देख़ें के क्या असदी भी शुहदा में से है। चुनांचे हम मारिके की ज़मीन पर आए, वहां तलाश किया तो देख़ा कि असदी भी शुहदा में से है।"

(तबक़ात इब्ने सअ़द, तरजमा इमाम हुसैन : 50 ह. 281, तारिख़े दमिश्क़ 14:216)

(9) صالح بن أربد النخعي،عن أم سلمة:

صالح بن أربد النخعي،عن أم سلمة رضى الله عنها،قالت:

"قال رسول الله ﷺ:اجلسى بالباب ولا يلجن على احد، فقمت بالباب اذ جاء الحسين عليه السلام،فذهبت أتناوله فسبقنى الغلام فدخل على جده،فقلت يا نبى الله –جعلنى الله فداك– أمرتنى ألايلج عليک أحد وان ابنک جاء فذهبت أتناوله فسبقنى، فلما طال ذلک تطلعت من الباب فوجدتک تقلب بكفيک شيئاً ودموعک تسيل والصبى على بطنک! قال:نعم،أتانى جبرئيل عليه السلام فأخبرنى أن أمتى يقتلونه، وأتانى بالتربة التى يقتل عليهافهى التى اقلب بكفى."

(9) "सालेह बिन अरबद नख़ई की रिवायत सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ से:

सालेह बिन अरबद नख़ई रिवायत करते हैं के सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ ने बयान किया के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "दरवाज़े पर बैठो, कोई मेरे पास अन्दर न आ सके।" मै दरवाज़े पर खड़ी हो गई। इतने में वहां हुसैन ﵇ आ गए। मैं उन्हें पकड़ने के लिये लपकी, लेकिन बच्चा मुझ से आगे निकलकर अपने नाना की गोद में जा बैठा। मैंने अ़र्ज़ किया : "अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! मेरी जान आप ﷺ पर

कुरबान ! आप ﷺ ने मुझ से कहा था कि किसी को अन्दर न आने दूं, लेकिन आप ﷺ के बेटे आए, मैं उन्हें पकड़ने के लिये लपकी, लेकिन वोह मुझ से आगे निकल गए ।" फिर जब काफी देर हो गई तो मैंने कमरे में झांक कर देखा तो देखा के **आप ﷺ अपनी हथेलियां मल रहे हैं, आप ﷺ की आंखों से आंसु जारी हैं** और बच्चा आप की पीठ पर खेल रहा है । आप ﷺ ने जवाब दिया कि हां, ऐसा ही था । मेरे पास जिब्रईल عليه السلام आए थे, उन्होंने मुझे बताया कि आपकी उम्मत इन्हें क़त्ल करेगी और उन की जाए शहादत की मिट्टी ला कर मुझे दी, इसी अफसोस में मैं अपने हाथ मल रहा हूं ।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:109 ह. 2820 और 32:328, मुस्नदे इब्ने रहाविया : 130 ह. 1897, मुसन्नफ इब्ने अबी शैबा 8:632 ह. 258, तबक़ात इब्ने सअ़द, तरजमा इमाम हुसैन 43-44 ह. 269, कन्ज़ुल उ़म्माल 13:658 ह. 37448)

(10) أبو وائل شقيق بن سلمة ، عن أم سلمة:

شقيق بن سلمة ، عن أم سلمة ، قالت:

" كان الحسن والحسين عليه السلام يلعبان بين يدى النبى ﷺ فى بيتى ، فنزل جبرئيل عليه السلام فقال: يا محمد ، ان أمتک تقتل ابنک هذا من بعدک. وأومأ بيده الى الحسين عليه السلام . فبکى رسول الله ﷺ وضمه الى صدره ، ثم قال رسول الله ﷺ : وديعة عندک هذه التربة، فشمها رسول الله ﷺ وقال: ويح کرب وبلاء.

قالت: وقال رسول الله ﷺ : يا أم سلمة ، اذا تحولت هذه التربة دما فاعلمى ان ابنى قد قتل ".

قال : فجعلتها أم سلمة فى قارورة ، ثم جعلت تنظر اليها کل يوم وتقول : ان يوما تحولين دما ليوم عظيم."

(10) "अबु वाइल शक़ीक़ की रिवायत सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها से :

शक़ीक़ बिन सलमा बयान करते हैं के सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फ़रमाया

हज़रत हसन और हज़रत हुसैन ﷺ मेरे घर में नबीए करीम ﷺ के सामने खेल रहे थे। इसी दौरान जिब्राईले अमीन ﷺ आ गए और उन्हों ने कहा : "अय मुहम्मद ﷺ ! आप की उम्मत आप के बा'द आप के इस बेटे को शहीद कर देगी।" और उन्हों ने हुसैन ﷺ की तरफ हाथ से इशारा कर के बताया। **येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ रोने लगे और उन्हें अपने सीने से चिमटा लिया।** फिर रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : ये मिट्टी तुम्हारे पास एक अमानत है। रसूलुल्लाह ﷺ ने मिट्टी सूंघी और फ़रमाया : "अफसोस ! येह तो सरापा करब व बला है।"

सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ बयान करती हैं के रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : "अय उम्मे सलमा ﷺ ! जब येह मिट्टी ख़ून में बदल जाए तो समझ लेना के मेरे बेटे हुसैन ﷺ शहीद कर दिये गए।" रावी का बयान है के सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ ने वोह मिट्टी एक शीशे में रख ली, उसे रोज़ पाबंदी से देखती रहतीं थी और कहा करती थीं के जिस दिन येह मिट्टी ख़ून में बदल जाए वोह बड़ा भारी दिन होगा।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:108 / ह. 2817, तारीख़े दिमश्क 14:192। बुग्यतुत्तलब 2:2599, व तहज़ीबुल कमाल 2:409, व तेहज़ीबुत्तहजीब 2:300)

(11) عائشة :

أبـو سلمة بن عبدالرحمن بن عوف ، عن ام المومنين عائشة رضى الله عنها:

أبو سلمة بن عبدالرحمن ، عن ام المومنين عائشة رضى الله عنها ، قالت: " ان رسـول الـلـه ﷺ أجـلـس حسينا على فخذه ، فجاء جبرئيل عليه السـلام اليـه ، فقال : هذا ابنک ؟ قال : نعم ، قال : أما ان أمتک ستقتله بعدک، فـدمعـت عيـنـا رسـول الـلـه ﷺ ، فقال جبرئيل عليه السلام : ان شئت أريتک الأرض التى يقتل فيها ، قال : نعم ، فأراه جبرئيل عليه السلام ترابا من تراب الطف"

(11) "अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान की रिवायत उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आ़एशा ﷺ से : अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान से रिवायत है के उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आ़एशा ﷺ ने फ़रमाया : "एक बार रसूलुल्लाह ﷺ हुसैन ﷺ को अपनी रानपर बिठाए हुए थे के

इतने में जिब्रईल علیه السلام आप ﷺ के पास आए और पूछा : 'क्या येह आप का नवासा है ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'हां ।' जिब्रईल علیه السلام ने कहा के **आप ﷺ के बा'द आप की उम्मत इन को शहीद कर देगी। येह सुन कर रसूलुल्लाह ﷺ की आंखें अश्कबार हो गई ।** जिब्रईल علیه السلام ने कहा के अगर आप चाहें तो मैं आप को उस सरज़मीन की मिट्टी ला दूं जहां इन को शहीद किया जाएगा । आप ﷺ ने फ़रमाया : 'लाओ दिखाओ ।' फिर जिब्रईल علیه السلام आप ﷺ को सरज़मीन तिफ़ की मिट्टी दिखाई ।"

(मक़्तलुल इमामुल हुसैन लिल ख़्वारज़्मी 1:233 / अल मुअ़जमुल औसत 6:249, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहक़ी 6:469, इललुद्दारकुतनी 5 : अल वरक़ ह. 38 / अत्तबक़ात इब्ने सअ़द : 46)

(12) عروة بن الزبير ، عن عائشة:

عروة بن الزبير، عن عائشة، قالت:

" دخل الحسين بن علي عليه السلام على رسول الله ﷺ وهو يوحى اليه ، فنزا على رسول الله ﷺ وهو منكب، ولعب على ظهره ، فقال جبرئيل عليه السلام لرسول الله ﷺ: أتحبه يا محمد ؟ قال ﷺ: يا جبرئيل ، وما لي لا أحب ابني!! قال : فان أمتک ستقتله من بعدک . فمد جبرئيل عليه السلام يده فأتاه بتربة بيضاء ، فقال : في هذه الأرض يقتل ابنک هذا يا محمد ، واسمها الطف.

فلما ذهب جبرئيل عليه السلام من عند رسول الله ﷺ خرج رسول الله ﷺ والتربة في يده يبكي ، فقال : يا عائشة ، ان جبرئيل عليه السلام أخبرني أن الحسين ابني مقتول في أرض الطف، وأن أمتي ستفتتن بعدي.

ثم خرج الى أصحابه فيهم علي عليه السلام وأبوبكر وعمر وحذيفة وعمار وأبوذر . .وهو يبكي ، فقالوا: ما يبكيک يا رسول الله ؟ فقال : أخبرني جبرئيل أن ابني الحسين يقتل بعدي بأرض الطف ، وجاء ني بهذه التربة وأخبرني أن فيها مضجعه".

(12) "उर्वह बिन ज़ुबैर की रिवायत उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आएशा رضی اللہ عنہا से :

उर्वह बिन ज़ुबैर बयान करते हैं के उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा आएशा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया : 'एक बार हुसैन رضی اللہ عنہ नबीए अकरम ﷺ के पास आए। उस वक़्त आप पर वही का नुज़ूल हो रहा था। वोह रसूलुल्लाह ﷺ के उपर सवार हो गए क्यूं के उस वक्त आप ﷺ झुके हुए थे। हुसैन رضی اللہ عنہ आप ﷺ की पुश्त मुबारक पर खेलने लगे। जिब्राईल علیہ السلام ने नबी ﷺ से पूछा : "अय मुहम्मद ﷺ ! आप इन से बहोत मुहब्बत करते हैं ?" आप ﷺ ने जवाब दिया : "जिब्राईल علیہ السلام ! येह मेरे बेटे हैं भला मैं इन से मुहब्बत क्यूं न करुंगा।" जिब्राईल ﷺ ने कहा के "आपकी उम्मत आप की वफात के बा'द इन को क़त्ल कर देगी।" येह केह कर उन्होंने हाथ बढा कर सफैद मिट्टी की एक मुट्ठी उठाई और कहा के अय मुहम्मद ﷺ ! यही वोह सरज़मीन है जहां आप ﷺ के बेटे हुसैन ﷺ को क़त्ल किया जाएगा। उस जगह का नाम तिफ है।

जब जिब्राईल ﷺ रसूलुल्लाह ﷺ के पास से उठ कर चले गए तो आप ﷺ अपने हाथ में मिट्टी लिये हुए और रोते हुए बाहर निकले। और कहा : "अय आएशा رضی اللہ عنہا ! जिब्राईल علیہ السلام ने अभी अभी मुझ ख़बर दी है के मेरे बेटे हुसैन رضی اللہ عنہ को सरज़मीन तिफ में क़त्ल किया जाएगा और मेरी उम्मत मेरे बा'द फित्नों से दो-चार हो जाएगी।"

फिर आप ﷺ अपने असहाब की तरफ गए जिन में अ़ली, अबू बकर, उ़मर, हुज़ैफा, अ़म्मार और अबूज़र رضی اللہ عنہم थे, **उस वक्त आप ﷺ रो रहे थे।** लोगोंने अ़र्ज़ किया : "अय अल्लाह ﷻ के रसूल ﷺ ! क्यूं रो रहे हैं ?" आप ﷺ ने फ़रमाया के "मुझे जिब्राईल علیہ السلام ने बताया है के मेरा बेटा हुसैन رضی اللہ عنہ मेरे बा'द सरज़मीन तिफ़ में क़त्ल कर दिया जाएगा। वोह मेरे पास येह मिट्टी लेकर आए थे और बताया के इसी मैं उसे लिटाया जाएगा।"

(अल मुअ़जमुल कबीर 3:107 / ह. 2814। मजमउ़ज़्ज़वाइद 9:187-188, फैज़ुल क़दीर 1:266)

शहादते हुसैन رضی اللہ عنہ के बाद रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم का ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ

- عن ابن عباس قال: رأيت النبي صلى الله عليه وسلم في المنام بنصف النهار أشعث أغبر معه قارورة فيها دم يلتقطه أو يتتبع فيها شيئا قال قلت يا رسول الله صلى الله عليه وسلم ما هذا قال دم الحسين وأصحابه لم أزل أتتبعه منذ اليوم قال عمار فحفظنا ذلك اليوم فوجدناه قتل ذلك اليوم [مسند احمد: 2165 (242/1)، قال الشيخ زبير عليزئی فی فضائل الصحابة و الشيخ شعيب الأرنؤوط: إسناده صحيح]

* इमाम अहमद बिन हम्बल رحمۃ اللہ علیہ सय्यिदना इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत करते है की, सय्यिदना अब्बास رضی اللہ عنہ फ़रमाते है की 'एक रोज़ दोपहर के वक़्त ख़्वाब में मैंने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को देखा की आपके गेसूए मुअत्तर (जुल्फ मुबारक व दाढी मुबारक के बाल) बिखरे हुए है और गुबार आलूद है, आपके हाथों में खून से भरी एक शीशी है, तो मैंने पूछा : 'मेरे मां-बाप आप صلی اللہ علیہ وسلم पर क़ुरबान ! ये क्या है ?' तो आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, हुसैन رضی اللہ عنہ और उनके साथियों का ख़ून है, मैं इसे जमा कर रहा हूं । (मुस्नद अहमद:2165 (1/242) (शैख़ ज़ुबेर अ़ली ज़ई और शैख़ अरनोवत ने इस हदीष की सनद को सहीह कहा है ।)

(1) رؤيا عبدالله بن عباس:

عن عمار بن أبی عمار ، عن ابن عباس، قال:

" رأيت النبی صلى الله عليه وسلم فيما يرى النائم بنصف النهار وهو قائم أشعث أغبر، بيده قارورة فيها دم. فقلت :

بأبی أنت وأمی يا رسول الله ما هذا؟ قال : هذا دم الحسين وأصحابه لم أزل ألتقطه منذ اليوم .فأحصينا ذلک اليوم فوجدوه قتل فی ذلک اليوم".

(1) सय्यिदना अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ का ख़्वाब :

"अ़म्मार बिन अबी अ़म्मार बयान करते हैं के इब्ने सय्यिदना अ़ब्बास رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया : मैं ने दोपहर के वक़्त क़ैलूला करते हुवे ख़्वाब में देखा के नबीए अकरम صلی اللہ علیہ وسلم बिख़रे बाल और गर्द में लिपटे हुवे कपड़े में खड़े हैं । आप के हाथ में एक शीशी है जिस में ख़ून है । मैं ने अ़र्ज़ किया : मेरे मां बाप आप رضی اللہ عنہ पर क़ुरबान ! ए अल्लाह के रसूल صلی اللہ علیہ وسلم, येह क्या है ? आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : येह हुसैन رضی اللہ عنہ और उन के साथियों का ख़ून

है जिसे मैं शहादत के दिन से लिये हुवे हूँ ।” मैंने उसे शुमार किया तो माअ़लूम हुवा के उसी दिन उन की शहादत हूई थी ।”

(तबक़ात इब्ने सअ़द : 46-47/ह़ 272। मुस्नदे अह़मद 1:283, फ़ज़ाइलुस़ स़ह़ाबा 2:779 / ह. 1381। अल इस्तीअ़ाब 1:395-392। मुस्नद अह़मद 1:242, फ़ज़ाइलुस्सहाबा 2:778 / ह. 1380 अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 4:397। दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैह़की 7:48। मुसनदे अ़ब्द बिन ह़मीद 235/180। फ़ज़ाइलुस्सहाबा 2:784 / ह. 1396 तारीख़े दिमश्क 14:237। अल मुअ़जमुल कबीर 3/110, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैह़की 6:471 अल मुअजमुल कबीर 12/143,144 अल मुअजमुल कबीर 3/110, 12, 143, 144 फ़ज़ाइलुस्सहाबा 2:781/ ह. 1389, तारीख़े दिमश्क 14/237, तारीख़े बग़दाद 1:152)

(2) رؤیا أم سلمة

عن سلمی ، قالت:

” دخلت علی أم سلمة وهی تبکی ، فقلت: ما یبکیک؟ قالت: رأیت رسول الله ﷺ.. تعنی فی المنام ..وعلی رأسه ولحیته التراب، فقلت : مالک یا رسول الله ؟ قال: شهدت قتل الحسین آنفا“.

(2) “सय्यिदा उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا का ख़्वाब :

सय्यिदा सलमा رضی اللہ عنہا बयान करती हैं कि मैं सय्यिदा उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا की ख़िदमत में ह़ाज़र हूई । देखा के **वोह रो रही हैं । मैंने रोने की वजह माअ़लूम की तो उन्हों ने** फ़रमाया के मैंने नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा है । आप ﷺ के सर मुबारक और दाढी ख़ाक आलूद हैं । मैंने पूछा के अय अल्लाह عزوجل के रसूल ﷺ ! येह क्या हुवा है ? आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं अभी अभी हुसैन رضی اللہ عنہ की शहादत देख कर लौटा हूं।”

(सुन्नन तिरमिज़ी 5:323 / ह. 3860, दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल बैहक़ी 7:47। अत्तारीख़ुल कबीर 3:324 / तरजमा 1098। अल मुअ़जमुल कबीर 32:373। तहज़ीबुल कमाल 9:187, तारीख़े दिमश्क 14:238। अल मुस्तदरक अलस्सहीहैन 4:19)

(3) وقال البخاری فی ترجمة رزین بیاع الأنماط من تاریخ الکبیر:
قال الأشج ، حدثنا أبو خالد ، قال حدثنا رزین ، قال : حدثنی سلمی:
" دخلت علی أم سلمة تبکی ، قالت : رأیت النبی ﷺ وعلی رأسه ولحیته التراب، قال: شهدت قتل الحسین آنفا".

(3) “इमाम बुख़ारी तारीख़े कबीर में ‘**रज़ीन बयाअ़लअन्मात**’ के तरजुमा में लिखते हैं के अशज ने बयान किया, उस ने कहा के हम से अबू ख़ालिद ने बयान किया, उसने बताया के हम से रज़ीन ने बयान किया, वोह केहते है के मुझ से सलमा ने बयान किया कि :

मैं सय्यिदा उम्मे सलमा ﷺ की ख़िदमत मैं हाज़िर हूई । देखा के वोह रो रही हैं । उन्होंने फ़रमाया के मैं ने नबी ﷺ को ख़्वाब में देखा है । आप ﷺ के सरमुबारक और दाढी ख़ाक आलूद हैं । आप ﷺ ने फ़रमाया : मैं अभी अभी हुसैन ﷺ की शहादत देख कर लौटा हूं ।” (अत्तारीख़ुल कबीर 3:324 / तर्जमा 1098)

शहादते हुसैन ﷺ से पेहले इमाम मौला अ़ली ﷺ का ग़मे हुसैन ﷺ में रोना

* इब्ने सअ्द - ने शअ्बी से बयान किया है के सिफ़्फ़ीन के तरफ जाते हुए हजरत अ़ली ﷺ करबला से गुजरे। जब फुरात के किनारे नैनवा बस्ती से गुजरे तो मौला अ़ली ﷺ ने वहां खडे होकर उस ज़मीन का नाम पूछा **तो आप को बताया गया की इसे 'करबला' कहते है। तो आप ﷺ रो पडे। यहां तक के आपके आंसूओ से ज़मीन तर हो गई।** फिर फ़रमाया : **मैं रसूलुल्लाह ﷺ के पास गया तो आप ﷺ रो रहे थे।** मैंने अर्ज किया 'आप किस वजह से गरिया कुनां है ?' फ़रमाया : 'अभी जिब्रइल ﷺ ने आकर खबर दी है की मेरा बेटा हुसैन ﷺ फुरात के किनारे एक जगह क़त्ल होगा, जिसे करबला कहा जाता है, फिर जिब्रइल ﷺ ने एक मुठ्ठी में मिट्टी पकड़कर मुझे सुंघाई तो मैं अपने आंसूओ को रोक नहीं सका।'
* हजरत असबग बिन नबाता ﷺ - फ़रमाते है, की जब हम मौला अ़ली ﷺ के साथ जंगे सिफ़्फ़ीन से वापस आए तो करबला से गुजर रहे थे जब कब्रे हुसैन ﷺ की जगह आई तो हजरत अ़ली ﷺ रुक गए और रोकर शुहदाए करबला के मुतालिक फ़रमाया : 'यहां उन शुहदाए किराम के उंट बांधे जाएगें, यहां उनके कज़ावें रखने की जगह है, यहां उनका खून बहने का मकाम है, कितने जवान आले मुहम्मद ﷺ के साथ खुले मेदान में क़त्ल किए जाएंगे उन पर ज़मीन व आसमान रोएंगे।'

(दलाइलुन्नुबुव्वाह, अबू नु'ऐम अस्फहानी, सफा-509)

(खसाइसे कुबरा, जिल्द-दुवम, सफा-126) (सिर्रुश्शहादतैन, सफा-3)

عبدالله بن عباس،عن على عليه السلام:

ذكرشيخ الاسلام الحاكم الجشمى:

"أن أميرالمؤمنين علياً عليه السلام لماسار الى صفين نزل بكربلاء، وقال لابن عباس :أتدرى ماهذه البقعة؟قال:لا،قال:لوعرفتها لبكيت بكائى،ثم بكى بكاءً شديداً،ثم قال: مالى ولآل أبى سفيان؟ثم التفت الى الحسين عليه السلام وقال:صبراً يا بنى ،فقد لقى أبوك منهم مثل الذى تلقى بعده."

✱ तर्जमा :

"अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास ؓ की रिवायत अ़ली عليه السلام से :

शैख़ुल इस्लाम हाकिम जश्मी ने ज़िक्र किया है :

अमीरुल मु'मिनीन अ़ली عليه السلام जब सिफ़्फ़ीन के लिये रवाना हुए तो रास्ते में करबला में उतरे और सय्यिदना इब्ने अ़ब्बास ؓ से कहा : "जानते हो येह कौनसी जगह है ?" उन्हों ने जवाब दिया : "नहीं ।" मौला अ़ली عليه السلام ने कहा के **अगर इस जगह के बारे में मा'लूम हो जाए तो मेरी तरह तुम भी आंसू बहाओगे । येह केह कर वोह शिद्दत से रोने लगे ।** उस के बा'द फ़रमाया : **"मेरा और आले अबी सूफ़ियान का क्या झगड़ा है ?"** फिर हुसैन ؓ की तरफ रुख़ किया और फ़रमाया : **"मेरे बेटे सब्र करना । आले अबी सूफ़ियान से तुम्हारे बाप को जिस तरह की अज़िय्यत पहूंची है उसी तरह की अज़िय्यत तुम्हें भी उन से मेरे बा'द पहूंचेगी ।"**

(मक्तले हुसैन, ख़्वारिज़्मी 1:236 ह. 10)

فى تذكرة الخواص:وقد روى الحسن بن كثير وعبدخير قالا:

"لماوصل على عليه السلام الى كربلاء وقف وبكى وقال: بأبيه أغيلمة يقتلون هاهنا،هذا مناخ ركابهم،هذا موضع رحالهم،هذا مصرع الرجل،ثم ازداد بكاؤه."

* तर्जुमा :

"तज़किरतुल ख़वास में है के हसन बिन कषीर और अ़ब्दे ख़ैर ने बयान किया : "**जब अ़ली ؑ करबला पहोंचे तो वहां ठहर गए और रोने लगे और फ़रमाया :** 'इस के बाप की कसम ! चन्द बच्चे यहां शहीद किये जाएंगे । येह उन की सवारीयों के रुकने की जगह है, यहां वोह पडाव डालेंगे, यहां उस ख़ास इन्सान को पछाड़ा जाएगा । **येह केह कर वोह शिद्दत से रोने लगे ।"**

(तज़किरतुल ख़वास : 250)

الأصبغ بن نباتة،عن علی علیه السلام:

عن الأصبغ بن نباتة،قال:

"أتينـا مـع علـى علـيـه السـلام فـمررنا بموضع قبر الحسين عليه السـلام،فقال على عليه السلام:هاهنا منا خ ركابهم،وهاهنا موضع رحالهم، وهـاهنا مهراق دمائهم،فتية من آل محمد يقتلون بهذه العرصة تبكى عليهم السماء والأرض."

* तर्जुमा :

"असबग़ बिन नबातह की रिवायत मौला अ़ली ؑ से :

असबग़ बिन नबातह ؓ बयान करते हैं के हम मौला अ़ली ؑ के साथ चल रहे थे के हमारा गुजर उस जगह से हुवा जहां आज हुसैन ؑ की क़ब्र है । मौला अ़ली ؑ ने फ़रमाया : यहां उन की सवारीओं की लगामें खींची जाएंगी, इस जगह वोह मुक़ीम होंगे और इसी जगह उन का ख़ून बहाया जाएगा । आले मुहम्मद ﷺ के बच्चे इसी मैदान में शहीद किये जाएंगे और आसमान जमीन उन पर ख़ून से आंसू बहाएंगे ।"

(दलाइलुन्नुबुव्वाह लिल अबी नु'एम अल अस्फ़हानी 2:541-542, ज़ख़ाइरुल उ़क़बा : 97 यनाबीउ़ल मवद्दत 2:186 ह. 541, अल फुतूह लिल इब्ने आसिम 2:462)

نجيّ،عن علی علیه السلام:

عبدالله بن نجيّ ،عن أبيه:

"أنـه سـار مـع عـلـى عـلـيـه السلام- وكان صاحب مطهرته-فلما

حـاذی نیـنـوی وهـو مـنـطـلق الی صفین،فنادی علی علیه السلام:اصبر أبا عبـدالـله ،اصبر أبا عبدالله بشط الفرات ،قلت:وماذا؟قال:دخلت علی النبی ﷺ ذات یـوم وعیـنـاه تـفیـضـان،قـلـت:یـانبی الله أغضبک أحد؟ ماشأن عیـنیک تـفیـضـان؟قـال:بل قام من عندی جبرئیل قبل. فحدثنی أن الحسین یـقتـل بشـط الـفـرات،قال:فقال:هل لک أن أشمک من تربته؟ قال: قلت: نعم،فمد یده فقبض قبضة من تراب فأعطانیها،فلم أملک عینی أن فاضتا."

قال الضیاء المقدسی الحنبلی فی الاحادیث المختارة: اسناده حسن.

* तर्जुमा :

"नज्जा की रिवायत मौला अ़ली عليه السلام से :

अ़ब्दुल्लाह बिन नज्जा अपने बाप से रिवायत करते हैं कि वोह मौला अ़ली عليه السلام के साथ रवाना हुए और मेरे वालिद उनकी तहारत वगैरा के ज़िम्मेदार थे, सिफ़्फ़ीन जाते हुए जब वोह नैनवा के पास से गुज़रे तो आवाज़ देते हुए फ़रमाया : "ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह (इमाम हुसैन رضي الله عنه की कुन्नियत) ! दरियाए फरात के किनारे सब्र करना, ऐ अबू अ़ब्दुल्लाह दरियाए फ़ुरात के किनारे सब्र करना।" मैंने अ़र्ज किया : "येह क्या बात हुई ?" फ़रमाया : **"मैं एक दिन नबी ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुआ, उस वक़्त आप की दोनों आंखों से आंसू जा रहे थे।"** मैंने पूछा : 'अय अल्लाह ﷻ के नबी ﷺ ! आप को किसने नाराज़ कर दिया है ? आप की आंखों से आंसू क्यूं बेह रहे हैं ?' आप ﷺ ने फ़रमाया : 'अभी अभी जिब्रईल عليه السلام मेरे पास से उठ कर गए हैं। उन्हों ने मुझ से कहा के हुसैन رضي الله عنه दरियाए फ़ुरात के किनारे शहीद किये जाएंगे। और येह भी कहा के अगर चाहें तो उस सरज़मीन की मिट्टी आप को सुंघने के लिये ला दूं।' मैंने जवाब दिया के 'ज़रूर ला दो।' फिर उन्हों ने हाथ बढा कर एक मुट्ठी मिट्टी मेरे सामने रख दी। येह देख कर मुझे अपनी आंखों पर काबू नहीं रहा।"

ज़ियाअ मुकद्सी हम्बली ने "अल अहादिषुल मुख़्तारा" में इस रिवायत की सनद को हसन बताया है।

(मुस्नद अहमद **1:85**, मुसन्निफ इब्न अबी शैबा **8:632** ह. **259**, मुस्नद अबी यअ़ला **1:298** ह. **363**, मुअजमुल कबीर **3/105**, ह. **2811**, तारीख़े दिमश्क **178/14** अल बिदाया वन-निहाया **217/8**, तहज़ीबुल कमाल **6:407**, सियरे अअ़लामुन्नुबला **3:288**, अल अहादिषुल मुख़्तारा **2:375** ह. **758**)

उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा ﵂ का ग़मे हुसैन ﵁ में गिरया

* अल्लामा ज़हबी ﵀ ने लिखा है, -

عبد الحميد بن بَهْرام ، وآخر ثقة ، عن شهْرِ بن حَوْشَب ، قال: كنتُ
عند أُمِّ سلمةَ زوجِ النبيِّ ﷺ حين أتاها قتلُ الحسين ، فقالت : قد فعلوها ؟!
ملأَ اللّهُ بيوتَهم وقبورَهم ناراً ، ووقعتْ مَغْشِيَّةً عليها ، فقمنا .

अब्दुल हमीद बिन बहराम और एक दूसरे मो'तबर रावी शहर बिन होशब से नक़्ल करते है के इब्ने होशब ने कहा के, "मैं हज़रत उम्मे सलमा ﵂ ज़ौजए नबी ﷺ के पास उस वक़्त मौजूद था जब उनके पास हज़रत हुसैन ﵁ के क़त्ल की ख़बर पहुंची तो उन्हों ने फ़रमाया की : 'उन लोगों ने ये काम अन्जाम दे दिया ? अल्लाह ﷻ उनके घरों को और उनकी कब्रो को आग से भर दे ।' और वोह बेहोश होकर गिर गई, हम उठकर चले आए ।"

(सियरे अअ्लामुन्नुबला, जिल्द-सोम, सफा-318)

(इसका Scan Page सफा नम्बर 36 पर है ।)

* एक और रिवायत में है की उम्मुल मु'मिनीन हजरत उम्मे सलमा ﵂ फ़रमाती है की जब क़त्ले हुसैन ﵁ की रात आई तो मैं रो पडी और मैंने बोतल को खोला तो मिट्टी ख़ून होकर बह पडी ।

(सवाईके मुहर्रिकह, हाफिज ईब्ने हजर मक्की, सफा-641)
(बहवाला : ज़वाहदुल मुस्नद इमाम अहमद बिन हम्बल)

سِيَرُ أَعْلَامِ النُّبَلَاءِ

تصنيف

الإمام شمس الدين محمد بن أحمد بن عثمان الذهبي

المتوفى

٧٤٨هـ - ١٣٧٤م

أشرف على تحقيق الكتاب وخرّج أحاديثه

شعيب الأرنؤوط

حقق هذا الجزء

محمد نعيم العرقسوسي و مأمون صاغرجي

الجزء الثالث

مؤسسة الرسالة

ابنُ ثمانٍ وخمسين . وماتَ لها حَسن ،وقُتـل لها حُسين[1] .

قلتُ : قولهُ : ماتَ لها حسن : خطأٌ ، بل عاشَ سبعاً وأربعين سنة .

قال الجماعةُ : مات يوم عاشوراء سنة إحدىٰ وستين ، زاد بعضُهم يوم السبت وقيل : يوم الجمعة ، وقيل: يوم الاثنين.

ومولده في شعبان سنة أربع من الهجرة .

عبد الحميد بن بَهْرام ، وآخر ثقة ، عن شهْر بن حَوْشَب ، قال: كنتُ عند أُمِّ سلمةَ زوجِ النبيِّ ﷺ حين أتاها قتلُ الحسين ، فقالت : قد فعلوها ؟! ملأ اللّهُ بيوتَهم وقبورَهم ناراً ، ووقعتْ مَغْشِيَّةً عليها ، فقمنا .

ونقل الزبير لسُليمان بن قَتَّة[2] يَرثي الحُسين :

وإنَّ قَتِيلَ الطَّفِّ مِنْ آلِ هاشِمٍ أَذَلَّ رِقاباً مِنْ قُرَيْشٍ فَذَلَّتِ
فَإِنْ يُتبِعُوهُ عائِذَ البَيْتِ يُصْبِحُوا كَعَادٍ تَعَمَّتْ عَنْ هُداها فَضَلَّتِ
مَرَرْتُ على أبياتِ آلِ مُحمَّدٍ فَأَلْفَيتُها أَمْثالَها حِينَ حَلَّتِ[3]

---

(١) « الطبراني » (٢٧٨٤) .

(٢) بفتح القاف ومثناة من فوق مشددة كما ضبطه ابن ناصر الدين في « توضيح المشتبه » ورقة ٢١٥ ، وابن حجر في « تبصير المنتبه » ١١٢٢/٣ ، وابن الجزري في « طبقات القراء » ٣١٤/١ ، وقد تصحف في « تعجيل المنفعة » إلى « قتة » ، وهو سليمان بن قتة التيمي مولاهم البصري ، روى عن ابن عباس ، وعمرو بن العاص وغيرهما ، روى عنه موسى بن أبي عائشة وغيره ، وكان فارساً شاعراً ، قال ابن الجزري : عرض القرآن على ابن عباس ثلاث عرضات ، وعرض عليه عاصم الجحدري ، مترجم في « تاريخ البخاري » ٣٢/٤ ، و « الجرح والتعديل » ١٣٦/٤ .

والأبيات منسوبة له في « الاستيعاب » ٣٧٩/١ ، و « البداية » ٢١١/٨ ، و « تهذيب ابن عساكر » ٣٤٥/٤ ، ٣٤٦ ، والأول والثالث والرابع والخامس منها في « حماسة أبي تمام » ٩٦١/٢ ، ٩٦٢ بشرح المرزوقي . ونسبه ياقوت الحموي إلى أبي دهبل ، ولم يتابع على ذلك .

(٣) رواية الشطر الثاني في « الحماسة » :

فلم أرها أمثالها يوم حُلّت

قال المرزوقي : يريد أنه قد ظهر عليها من آثار الفجع والمصيبة ما صارت له دهشاً ، =

शुहदाए किराम का ग़म करना नबी ﷺ व बिन्ते नबी ﷺ फ़ातिमा ज़हरा عليها السلام का तरीका

* इमाम बुखारी رحمة الله अपनी सहीह मे शुहदाए बद्र رضي الله عنهم के लिये नबीए करीम ﷺ के सामने नौहा (मरषिया) पढने के बयान में एक हदीष लाए हैं ।

حَدَّثَنَا مُسَدَّدٌ، حَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ الْمُفَضَّلِ،

حَدَّثَنَا خَالِدُ بْنُ ذَكْوَانَ، قَالَ: قَالَتِ الرُّبَيِّعُ

بِنْتُ مُعَوِّذِ بْنِ عَفْرَاءَ: جَاءَ النَّبِيُّ صَلَّى

اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، فَدَخَلَ حِينَ بُنِيَ عَلَيَّ،

فَجَلَسَ عَلَى فِرَاشِي كَمَجْلِسِكَ مِنِّي، فَجَعَلَتْ

جُوَيْرِيَاتٌ لَنَا يَضْرِبْنَ بِالدُّفِّ وَيَنْدُبْنَ مَنْ

قُتِلَ مِنْ آبَائِي يَوْمَ بَدْرٍ، إِذْ قَالَتْ إِحْدَاهُنَّ:

وَفِينَا نَبِيٌّ يَعْلَمُ مَا فِي غَدٍ، فَقَالَ: دَعِي هَذِهِ،

وَقُولِي بِالَّذِي كُنْتِ تَقُولِينَ .

* **तर्जमा :** इमाम बुख़ारी ﷺ रिवायत करते हैं : 'हमे मुसद्दद ने हदीष बयान की उन्होंने कहा : हमें बशर इब्ने मुफद्दिल ने हदीष बयान की, उन्होंने कहा हमें ख़ालिद बिन ज़कवान ने हदीष बयान की, उन्होंने कहा : रुबीअ् बिन्ते मुअव्विज़ बिन अफ़रा ने बताया : ' जब मुझे मेरे ख़ाविन्द के पास पेश किया गया उस मौका पर नबी ﷺ तशरीफ लाए, सो आप ﷺ मेरे बिस्तर पर बैठ गए जिस तरह तुम (ख़ालिद बिन ज़कवान) मेरे करीब बैठे हो, उस वक़्त लडकिया डफ बजा रही थी और गज़वए बद्र में जो मेरे आबाअ् कत्ल किये गए थे उन पर नौहा कर रही थी, अचानक उनमें से एक लडकी ने ये शैर पढा :' हम में ऐसे नबी मौजूद है जिनको आनेवाले कल का इल्म है, तो आप ﷺ ने फ़रमाया : ये शैर न पढो और जो अशआर तुम पेहले पढ रही थी वही पढती रहो ।

(सहीह बुख़ारी : बाब : निकाह और वलीमा की तक़रीब में डफ बजाना, हदीष - 5147)

- **तशरीह :** इस हदीष को इमाम बुख़ारी ﷺने बाब 'निकाह और वलीमा की तक़रीब में डफ बजाना' में बयान किया है जिसमें उन्होंने निकाह जैसी ख़ुशी के मौके पर नबी ﷺ के सामने डफ बजाया जाता था और आपने इससे मना नहि किया ये सहीह हदीष से बयान किया है ।
- इस हदीष को इसी सनद इमाम तिरमीज़ीने अपनी 'सुनन' में बयान किया है और इस हदीष को 'हसन सहीह' कहा है ।

(सुनन तिरमिज़ी, हदीष 1090)

- इस हदीष को इब्ने माजा ﷺ ने एक और सनद से बयान किया है और हदीष सहीह है ।

(इब्ने माजा : गाने और डफ बजाने के बयान में, दिल्द-3, हदीष-1897)

- इस हदीष को बुख़ारी की ही सनद से इब्ने दाउद ﷺ ने अपनी 'सुनन' मे नक़्ल किया है और हदीष सहीह है ।

(सुनन इब्ने दाउद, बाब : गाने के बयान में, जिल्द-4, हदीष - 4922)

- इस हदीष में जो वाक़ेआ बयान हुआ के रावी रुबीअ् बिन्ते मुअव्विज़ की शादी के मौक़े पर नबी ﷺ तशरीफ लाते है और आपके सामने बच्चियाँ शुहदाए बद्र ﷺ के ग़म में मरषिया पढती है मगर अचानक जब वो आप ﷺ की

शानमें मन्कबत पढना शुरु करती है तो नबी ﷺ इनको रोक कर वापस वही मरषिया जो जंगे बद्र के शुह्दा के ग़म मे पढा गया वो पढने का हुक्म देते है, ईससे पता चला के शुहदाए इस्लाम के ग़म में मरषिये सुनना नबी ﷺ की सुन्नत है । बेशक शुहदाए इस्लाम ज़िन्दा है मगर उनका ग़म ताजा करने के लिए मरषिया या नौहा पढ सकते है, इस फे'ल से नबी ﷺ ने रोका नहीं बल्के आपने बज़ाते खुद इसको सुनने की फ़रमाइश की है ।

✱ फतवा रिज़वीय्या में भी मरषिये पढने का जिक्र :

- इस हदीष का ज़िक्र अल्लामा अहमद रिज़ा ख्रान बरेल्वी رحمة الله عليه ने भी फतवा रिजवीय्या जिल्द-23 में किया है जिसमें उन्होने नबीए करीम ﷺ के सामने एक निकाह के मोके पर बच्चीयों का डफ बजाकर शुहदाए बद्र رضي الله عنهم की शान मे मरषिये पढना नक़्ल किया है इससे ये बात साबित है के शुहदाए इस्लाम के ग़म मे अश्आर या'नी मरषिये सुनना नबी ﷺ की सुन्नत है । अफसोस खुद को अहमद रिजा बरेल्वी رحمة الله عليه के चाहनेवाला बतानेवाली जमाअत का एक गिरोह नबी ﷺ के शहीद नवासे के शहादत कि अस्रा में नए साल की मुबारकबादी देने में मशगूल रहेता है । अल्लाह ﷻ हम सबको नेक हिदायत अता फ़रमाए । आमीन.
- यहाँ फतवा रिज़वीय्या के scan page पेश है :

منع کرتے کرتے اپناکام کر گزریں گی بلکہ شریف زادیوں کاان آوارہ بدوضعوں کے سامنے آنا ہی سخت بیہودہ وبیجا ہے۔ صحبت بد زہر قاتل ہےاور عورتیں نازک شیشیاں ہیں جن کے ٹوٹ جانے کے لئے ایک ادنی سی ٹھیس بھی بہت ہوتی ہے اسی لئے حضور اقدس صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے یاانجشۃ رُوَیدًا بالقواریر [1] (اے انجشہ! ٹھہر جاؤ کہیں کانچ کی شیشیاں ٹوٹ نہ جائیں۔ت) فرمایا۔

هذا کله ظاهر بین عند من نور الله تعالٰی بصیرته وجمیع مانهینا عنه فان علیه دلائل ساطعة من القراٰن العظیم والحدیث الکریم والفقة القویم بیدان وضوح الحکم اغنانا عن سردها فلنذکر بعض دلائل علی ماذکرنا اباحته فانا نرٰی ناسا یشد دون الامر یطلقون القول بالتحریم و منهم من یبیح ضرب الدف بشرط ان لایکون معه شیئ من الشعر وانما یکون محض دف مع ان الاحادیث ترد ذٰلك کما ستعلم مماهنالك اخرج الامام البخاری فی صحیحه من الربیع بنت معوذ بن عفرا قالت جاء النبی صلی الله تعالٰی علیه واله وسلم

یہ سب کچھ اچھی طرح واضح ہے ہر اس بندے پر جس کو اللہ تعالٰی نے دل کی روشنی بخشی ہےاور تمام وہ باتیں جن سے ہم نے منع کیا ہے کیونکہ اس پر قرآن عظیم، حدیث مبارک اور فقہ قویم کے روشن دلائل موجود ہیں لہٰذا واضح حکم نے ہمیں اس کی تفصیل سے بے نیاز کردیا ہے پھر ہم بعض دلائل بیان کرتے ہیں اس مسئلہ پر جس کی اباحت ہم نے پہلے ذکر کردی کیونکہ کچھ لوگوں کو ہم دیکھتے ہیں کہ وہ معاملہ میں سختی کرتے ہیں اور مطلق تحریم کا قول ذکر کرتے ہیں (قول بالتحریم مطلق بیان کرتے ہیں) اور کچھ وہ لوگ ہیں جو دف بجانا مباح کہتے ہیں مگر اس شرط کے ساتھ کہ اشعار نہ پڑھے جائیں بلکہ صرف دف بجائی جائے حالانکہ حدیث میں اس کی تردید آئی ہے اور جو کچھ یہاں مذکور ہوگا عنقریب تم جان لوگے امام بخاری نے اپنی صحیح میں ربیع بنت معوذ بن عفراء کے حوالہ سے تخریج فرمائی کہ اس بی بی نے فرمایا کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم ان کے ہاں

[1] صحیح بخاری کتاب الادب قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۹۰۸-۱۰، صحیح مسلم کتاب الفضائل باب رحمتہ صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم النساء قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۲۵۵، مسنداحمد بن حنبل عن انس رضی اللہ تعالٰی عنہ المکتب الاسلامی بیروت ۳/ ۲۵۴

فدخل حسین بن علی فجلس علی فراشی کمجلسك منی فجعلت جویریات لنا یضربن بالدف ویندبن من قتل من اٰبائی یوم بدر [1] الحدیث۔

واخرج ایضا عن ام المومنین الصدیقة رضی الله تعالٰی عنها انها زفت امرأة الی رجل من الانصار فقال نبی الله صلی الله تعالٰی علیه وسلم ماکان معکم لهو فان الانصار یعجبهم اللهو [2]۔

واخرج القاضی المحاملی عن جابر بن عبدالله رضی الله تعالٰی عنهما فی هذاالحدیث انه صلی الله تعالٰی علیه وسلم قال ادرکیها یا زینب امرأة کانت تغنی بالمدینة [3]۔

تشریف لائے تو حضرت حسین بن علی حاضر خدمت ہوئے اور میرے بچھونے پر اس طرح تشریف فرماہوئے جیسے تمھارا میرے پاس بیٹھنا ہےاور ہماری کچھ بچیاں دف بجابجا کر ہمارے اکابر شہداء بدر کے مرثیے پڑھتی رہیں۔الحدیث۔

اور یہ بھی ام المومنین حضرت عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا کی سند سے تخریج فرمائی کہ ایک دلہن اپنے انصاری شوہر کے گھر رخصت کی گئی تو حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے فرمایا کیا تمھارے پاس کوئی کھیل (گانے بجانے) کا سامان نہ تھا کیونکہ انصار اس سے جوش میں آتے ہیں اور خوش ہوتے ہیں، قاضی محاملی نے حضرت جابر بن عبداللہ رضی اللہ تعالٰی عنہما کے حوالے سے اس حدیث کی تخریج فرمائی کہ حضور صلی اللہ تعالٰی علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ اے زینب! کسی ایسی عورت سے رسائی حاصل کرو جو مدینہ منورہ میں گانے والی ہو، محدث ابن ماجہ نے حضرت ابن عباس کے حوالے سے تخریج فرمائی (اللہ تعالٰی دونوں سے راضی ہو) انھوں نے فرمایا سیدہ عائشہ صدیقہ رضی اللہ تعالٰی عنہا نے قبیلہ انصار میں اپنی ایک قربتدار کا نکاح کیا تو حضور اکرم صلی اللہ تعالٰی علیہ وآلہ وسلم

[1] صحیح البخاری کتاب النکاح باب ضرب الدف بالنکاح قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۷۳

[2] صحیح البخاری باب النسوۃ اللاتی یهدین المرأۃ الخ قدیمی کتب خانہ کراچی ۲/ ۷۷۵

[3] فتح الباری بحوالہ المحاملی کتاب النکاح باب النسوۃ اللاتی یهدین المرأۃ الخ مصطفی البابی مصر ۱۱/ ۱۳، عمدۃ القاری کتاب النکاح باب النسوۃ اللاتی یهدین المرأۃ الخ ادارۃ الطباعۃ المنیریۃ بیروت ۲۰/ ۱۴۹

सय्यिदुश्शुहदा अमीर हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷛ के ग़म मे सय्यिदा फ़ातिमा ﷛ बिन्ते रसूलुल्लाह ﷺ का रोना

* इमाम हाकिम 'अल मुस्तदरक अस्सहीहैन में हदीष नकल करते है :

4319ـ اَخْبَرَنَا اَبُو عَبْدِ اللّٰهِ مُحَمَّدُ بْنُ عَبْدِ اللّٰهِ الصَّفَّارُ حَدَّثَنَا اَبُوْ بَكْرِ بْنُ اَبِى الدُّنْيَا الْقَرَشِىُّ حَدَّثَنِى عَلِىُّ بْنُ شُعَيْبٍ حَدَّثَنَا بْنُ اَبِى فُدَيْكٍ اَخْبَرَنِى سُلَيْمَانُ بْنُ دَاوٗدَ عَنْ اَبِيْهِ عَنْ جَعْفَرَ بْنِ مُحَمَّدٍ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ اَبَاهُ عَلِىَّ بْنَ الْحُسَيْنِ حَدَّثَهُ عَنْ اَبِيْهِ اَنَّ فَاطِمَةَ بِنْتَ النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ كَانَتْ تَزُوْرُ قَبْرَ عَمِّهَا حَمْزَةَ بْنِ عَبْدِ الْمُطَّلِبِ فِى الْاَيَّامِ فَتُصَلِّى وَتَبْكِىْ عِنْدَهُ ـ

هٰذَا حَدِيْثٌ صَحِيْحُ الْاِسْنَادِ وَلَمْ يُخَرِّجَاهُ

* **तर्जमा** :- हमको खबर दी अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन अब्दिल्लाह सफ़्फ़ार से उन्होंने सुना अबूबक्र बिन अबूद्दन्या अल करसी से उन्होंने सुना अ़ली बिन शुअ़य्ब से उन्होंने सुना बिन अबू फुदयकिन से उन्होंने खबर दी सुलैमान बिन दाऊद्र से उन्होंने रिवायत किया अपने वालिद से उन्होंने रिवायत किया जा'फर बिन मुहम्मद (इमाम जा'फर सादिक ﷛) से, इमाम जा'फर सादिक अपने वालिद (इमाम बाक़िर ﷛) के हवाले से उनके वालिद (इमाम ज़यनुल आबेदीन ﷛) का बयान नक़ल करते हैं, उनके वालिद हज़रत इमाम हुसैन ﷛ फ़रमाते हैं, **"हज़रत फ़ातिमा ﷛ अमूमन नबी अकरम ﷺ के चचा हज़रत हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब ﷛ की कब्र की ज़ियारत के लिए जाया करती थी और उनकी कब्र के पास नमाज़ भी पढती थी और बहुत रोया करती थी ।"**

"ये हदीष सहीहुल ईस्नाद है लेकिन इमाम बुखारी ﷬ और इमाम मुस्लिम ﷬ ने इनको नक़्ल नहीं किया ।"

(अल मुस्तदरक लिल हाकिम, जिल्द-4, सफा-89, ह.4319)

सय्यिदुश्शुहदा अमीर हम्ज़ा عليه السلام की शहादत
व
ग़मे रसूलुल्लाह ﷺ

* रसूलुल्लाह ﷺ के प्यारे चचाजान सय्यिदुश्शुहदा अमीर हम्ज़ा عليه السلام जंगे ओहद में सन 3 हिजरी मे शहीद हुए उसके तक़रीबन 5 या 6 सालो के बाद जब उनका क़ातिल 'वहशी' इस्लाम लाया तो नबी ﷺ ने उसे अपने सामने आने से मना कर दिया हालाँके वो इस्लाम ला चूका था। मगर येह नबी ﷺ का अपने प्यारे चचा की शहादत का ग़म था जो आप ﷺ को 'वहशी' के सामने आने से ताजा हो रहा था. अब उम्मते मुस्लिमा को गौर करना चाहिए जब चचा की शहादत पर नबी ﷺ का ग़मका ये आलम है तो जिस हुसैन عليه السلام को कँधो पर बिठाया हो, जिसकी सवारी की वजह से सज़्दे लम्बे किए हो, जिसका रोना तक अल्लाह عزوجل और उसके रसूल ﷺ को गवारा न हो उस हुसैन عليه السلام की शहादत पर नबी ﷺ के ग़म का अन्दाज़ा हम और आप नहीं लगा सकते।
* इस पूरे वाक़ेआ को एक सलफ़ी आलिम शैख़ अब्दुल्लाह दानिश जो आशिके अ'ह्ले बैत है उन्होने अपनी किताब "अरबईन फज़ाइले इमाम हुसैन عليه السلام" में कुछ इस तरह नक़ल किया हैं

☆ **हज़रत हमज़ा के क़ातिल पर नबीय्ये-रहमत ﷺ का इज़्हारे रंजिश**

सहीह-बुख़ारी में दिया गया है: हमज़ा رضي الله عنه का क़ातिल वहशी बिन हर्ब जब अहले ताइफ़ के हमराह, दरबारे नुबुव्वत में मदीना शरीफ़ आया, **केहता है: जब मुझे हुज़ूरे अकरम ﷺ ने देखा तो पूछा :**

آنت وحشی؟

"क्या तू वहशी है?"

मैंने अर्ज़ किया, जी हाँ! फिर पूछा :

أنت قتلت حمزة؟

"क्या तूने हमज़ा को क़त्ल किया था?"

मैंने कहा: जी हुज़ूर ﷺ ! फिर फ़रमाया :

فهل تستطيع ان تغيب وجهک عنی ؟

"क्या ये मुम्किन है के तू अपना चेहरा मुझसे छुपा ले या दूर रहे?"

तो मैं निकल आया।

(हदीष 4072, बुख़ारी शरीफ़)

☆ **इससे आगे अल्लामा इब्ने हजर رحمۃ اللہ علیہ से रिवायत लाए हैं :**

فقيل لرسول اللّٰه ﷺ هذا وحشی،فقال ﷺ :"دعوه فالاسلام رجل واحد،احب الی من قتل الف کافر"

हुज़ूरे अकरम ﷺ को बताया गया के येह वहशी है, आप ﷺ ने फ़रमाया: "उसे छोड़ दो, एक आदमी का मुसलमान हो जाना मुझे, हज़ार काफ़िर क़त्ल करने से ज़्यादा महबूब है।" या'नी इस्लाम ने उसकी जान बख़्शी है, वरना वह वाजिबुल क़त्ल था।

आगे इब्ने हजर رحمۃ اللہ علیہ मुस्नद अबी दाऊद तयालिसी की यह रिवायत भी लाए हैं :

आप ﷺ ने फ़रमाया :

"غيب وجهک عنی فلا اراک"

"अपना चेहरा मुझसे छिपाके रख, आइंदा कभी देखने ना पाऊं।"

हुज़ूरे अकरम ﷺ अपने महबूब चाचा, हज़रत हमज़ा के वहशियाना क़त्ल पर, इंतहाई सदमे से दोचार थे। चाचा का क़ातिल जब मुसलमान हो के सामने आया, तो क़ानूने ख़ुदावंदी के पाबंद पैग़ंबर मुहम्मद ﷺ क़ानूने शरीयत के

मुताबिक़, उसे माफ़ करते हैं, मगर क़ानूने फ़ितरत के हाथों मजबूर हैं के एक ज़ालिम और क़ातिल को माफ़ करने के बावजूद, फ़रमाते हैं के अपना चेहरा मुझसे छुपाए रखना तुझे देखकर मेरा ज़ख़्मे दिल हरा हो जाता है और सदमा ताज़ा हो जाता है।

ये तो मामला था, उस शख़्स का जिसने हालते कुफ्र में, येह जुर्म किया था और इस्लाम क़ुबूल करने के बाद बख़्शा गया और चेहरा कुशाई से महरूम हुआ। लेकिन जिसने मुसलमान होते हुए नवासाए रसूलुल्लाह ﷺ को बेदर्दी से क़त्ल किया, उसका क्या बनेगा? क्या इसे भी हुज़ूरे अकरम ﷺ रोज़े महशर में येही फ़रमाएंगे कि,

"غیب وجھک عنی فلا اراک"

मुझसे अपना चेहरा दूर कर, आइंदा कभी ना देखूं।

या क़ातिले नवासाए-रसूलुल्लाह ﷺ को कोई और सज़ा नसीब होगी?

आप ﷺ के चाचा को क़त्ल करने वाला, चेहरा दिख़ाने के क़ाबिल ना रहा और क्या क़ातिले हुसैन رضی اللہ عنہ को हुज़ूरे अकरम ﷺ सीने से लगाएंगे? और उस का मुँह चूमेंगे? बल्के क़त्ले हुसैन رضی اللہ عنہ के मंसूबासाज़, जो मरकज़ी व सूबाई हुकूमत के ज़िम्मेदार थे, वो सब रुसवा होंगे।

या'नी आसमान को पूरा हक़ हासिल था के जब हुज़ूरे अकरम ﷺ के नज़रियात ज़वाल पज़ीर (चकनाचूर) हों, तो वह ख़ून की बारिश बरसाता रहे।
(अरबईन फ़ज़ाइले इमाम हुसैन علیہ السلام, शैख़ अब्दुल्लाह दानिश)

इमाम ज़ैनुलआबिदीनعليه السلام और ग़मे हुसैनعليه السلام

* इमाम ज़ैनुलआबिदीनعليه السلام के आँसू वाक़ेआ करबला के बा'द बन्द नहीं हुए। जो भी इमाम ज़ैनुलआबिदीनعليه السلام को देखता था सवाल करता के "आप इतना गिरया क्यूँ करते है ?" आप फ़रमाते के : "मेरी मज़म्मत क्यूँ करते है, याकूबعليه السلام का बेटा (यूसुफعليه السلام) थोड़े अर्से के लिए उनसे दूर हुवा था उन्होंने इस कद्र गिरया किया के उनकी बिनाई ख़तम हो गई लेकिन मेरे ख़ानदान के 14 जवानो के एक दिनमें मेरे सामने सर क़लम किए गए। क्या मेरा ग़म कभी ख़त्म हो सकता है ?"

(तेहज़ीबुल कमाल, इमाम मिज़्ज़ीرحمه الله, जिल्द-20, सफा-399)
(तारीख़ु मदीनतु दिमश्क, जिल्द-41, सफा-386)

* हाफिज़ इब्ने कषीर लिख़ते हैं :

एक आदमीने इमाम ज़ैनुलआबिदीनعليه السلام को कहा की "आप हर वक़त ग़मनाक ही रहेते हैं और आप के आँसू कभी ख़ुश्क नहीं होते," इमाम ज़ैनुलआबिदीनعليه السلامने उस आदमी को जवाब दिया : "हज़रत याकूबعليه السلام के बेटे हज़रत यूसुफ़عليه السلام गुम हो गये थे (फौत नहीं हुवे थे) हज़रत याकूबعليه السلام की आँखे उनके गम व फ़िराक़ मे रो रो कर सुफेद हो गई, मैंने तो अपनी आंखों के सामने अपने घर के अठारह अफ़राद दुश्मन के हाथ ज़ब्ह होते हुवे देखे हैं मैं कैसे ग़मनाक ना होउं और कैसे ना रोउं तुम देख़ते नहीं उनके गम की वजह से मेरे दिल के टुकडे हो रहें हैं"

(इब्ने कषीर फ़ी अल बिदाया वन्निहाया, 09/107)

ग़मे हुसैन رضي الله عنه में आसमान का गिरया करना

* **इमाम जलालुद्दीन सुयूती رحمة الله अपनी तफसीरे कुरआन 'तफसीर दुर्रे मन्सुर' में 'सूरह दुख़ान' की आयत नंबर 29 की तफसीर में लिखते है -**

فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوا مُنْظَرِينَ ﴿٢٩﴾

तरजुमा :- फिर न (तो) उन पर आसमान और ज़मीन रोए और न ही उन्हे मोहलत दी गई ।

* **तफसीर :-** इमाम इब्ने अबी हातिम رحمة الله, हजरत उबैद अल मकतब رحمة الله से और वोह हजरत इब्राहिम अल नख़ई ता'बई رحمة الله से रिवायत नक़्ल करते है : "जब से कायनात तख़लीक हुई है आसमान और ज़मीन सिवाय दो अफराद के किसी के लिए नहीं रोई ।" उन्होंने उबैद अल मकतब رحمة الله से पूछा के "(क्या) उन्हे पता है की आसमान व ज़मीन मोमीन पर नहीं रोते ?" (फिर) फ़रमाया : "वो जगह रोती है जहां वो रहता है और आसमान में जहां से उसका अमल बुलन्द होता है ।" फिर (उबैद) से पूछा "क्या तूं जानता है की आसमान के रोने से क्या मुराद है ?" (उबैद) ने अर्ज किया, "नहीं ।" (इब्राहिम नख़ई رحمة الله) ने फ़रमाया : **"वो सुर्ख़ (लाल) हो जाता है और उसका रंग रंगे हुए चमडे की तरह सुर्ख़ हो जाता है, हजरत यह्या बिन जकरिया عليه السلام को जब क़त्ल किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया और उसने ख़ून बरसाया और जब हजरत इमाम हुसैन رضي الله عنه को शहीद किया गया तो आसमान सुर्ख़ हो गया था ।"**
* इमाम इब्ने अबी हातिम رحمة الله ने हजरत ज़ैद बिन ज़ियाद رحمة الله से रिवायत नक़्ल की है जब हजरत इमाम हुसैन رضي الله عنه को शहीद किया गया तो चार माह तक आसमान के किनारे सुर्ख़ (लाल) रहे ।

(तफसीर : दुर्रे मन्सुर, जिल्द-05, सफा-1112/1113)

सूरज को ग्रहण लगा और सात (७) दिन तक अंधेरा छा गया

* हजरत अल्लामा जलालुद्दीन सुयूती ﷺ फ़रमाते है : जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ शहीद किए गए उस दिन सूरज को ग्रहण लग गया। सात दिन तक दुनिया में अंधेरे का आलम रहा। 4 महिनों तक आसमान के किनोर सुर्ख़ (लाल) रहे। धीरे धीरे ये सुर्ख़ी (ललाश) चली गई। मगर आज भी सुब्ह व शाम के वक़्त इसी सुर्ख़ी को देखा जाता है जो इससे पेहले नहीं थी।
* रिवायत है के जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ को शहीद किया गया तो इतना जबरदस्त सूरज ग्रहण हुआ की दिन में सितारे निकल आए।

(मजमाउल ज़वाइद, जिल्द-07, हदीस-115-163)

सितारें टूटने लगे

* यज़ीदी लश्करीयो ने जब सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ के लश्कर में एक उंट को ज़िबह किया तो उसका गोश्त सुर्ख़ (लाल) हो गया और पकाया तो कडवा हो गया। दीवारों पर धूप का रंग ज़ाफरानी (केसरी) रहा। सितारे एक-दूसरे पर टूट कर गिरते रहे।

(शहीद इब्ने शहीद, पेज-365/366) (तारीख़ुल ख़ुल्फा - पेज-304) (सवाइके मुहर्रिकह, पेज-645)

* हजरते उम्मे हिब्बान फ़रमाती है की : जिस दिन हज़रत इमाम हुसैन ﷺ शहीद किए गए उस दिन से हम पर तीन रोज़ तक अंधेरा रहा और जिस शख़्स ने मुंह पर जाफरान (केसर) लगाया उसका मुंह जल गया और बैतुल मुकद्दस के पथ्थरों के नीचे ताज़ा खुन पाया गया। **(ख़साइसे कुबरा, भाग-2, पेज-206)**

आसमान से खून बरसा

* हजरत अ़ली बिन मसहर अपनी दादी से रिवायत करते है की वो फ़रमाती है : मैं हज़रत इमाम हुसैन ﷺ की शहादत के वक़्त जवान लडकी थी, कई दिनों तक आसमान उन पर रोया या'नी खुन बरसा। **(बैहकी (इमाम बैहकी), सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33)**
* इमाम इब्ने सीरीन ﷺ फ़रमाते है की : बेशक दुनिया पर तीन दिन तक अंधेरा रहा और आसमान पर सुर्ख़ी (ललाश) ज़ाहिर हुई और आसमान पर शफक के साथ जो सुर्ख़ी होती है वो सय्यिदना इमाम हुसैन ﷺ की शहादत से पहले नहीं थी।

(तेहज़ीबुत्तहज़ीब, पेज-354) (सिर्रुश्शहादतैन, पेज-33)

(बहवाला : ख़ुत्बाते करबला, पेज-215-216) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-645)

सय्यिदना इमाम हुसैन رضي الله عنه की शहादत पर जिन्नातों की नौहा ख्वानी

मदीना शरीफ, बारगाहे रसूल ﷺ में जिन्नातों की नौहा ख्वानी

* उम्मुल मु'मिनीन सय्यिदा उम्मे सलमा رضي الله عنها ने फ़रमाया : मैंने सुना शहादते हुसैन رضي الله عنه पर जिन्नातोंने नौहा ख्वानी की वो रोकर ये पढ रहे थे

أيها القوم القاتلون حسيناً ابشروا بالعذاب والتنكيل
قد لعنتم على لسان داؤد وموسى وحامل الإنجيل

तर्जुमा :

"ऐ हुसैन رضي الله عنه के क़ातिलों ! अज़ाब की खुशख़बरी हासिल करों, हज़रत दाउद, हज़रत मूसा और हज़रत ईसा عليهم السلام के ज़रीए तुम पर ला'नत की गई ।"

(शैख़ आलिम मुहदिष हसन बिन ज़मान बिन कासिम अली जुल्फिकार अली बिन इमाम कुल तुर्कमानी हैदराबादी मु -1325 जिक्रे शहादत अली व हुसैन رضي الله عنهما P-111)

* हजरत मैमुना رضي الله عنها फ़रमाती है की उन्होने हजरत हुसैन رضي الله عنه पर जिन्नात को नौहा करते सुना है ।

(शहीद ईब्ने शहीद, पेज-365) (दलाईलुन्नुबुव्वाह, अबु नुए'म असफहानी, जिल्द-02, हदीष-1801-1804) (सवाइके मुहर्रिका, पेज-191) (अलबिदाया वन्निहाया, जिल्द-08, पेज-201) (मजमाउल जवाईद, जिल्द-7, किताब मनाकिब, हदीस-15179, 15180) (हाफिज हैसमी رحمه الله कहते है की ये दोनों रिवायत सहीह है ।)

ग़मे हुसैन ﷺ में ज़मीन का गिरया करना

وعن الزهری ، قال: مارفع بالشام حجر یوم قتل الحسین بن علی، إلا عن دم.

तर्जुमा : इमाम अल जुहरी ﷺ रिवायत करते है की सय्यिदना इमाम हुसैन के क़त्ल के दिन शान (सीरिया) में जो भी पथ्थर उठाया जाता उसके नीचे से ताज़ा ख़ून नज़र आता ।

(मजमउज़्ज़वाइद, जिल्द-07, हदीष-15160) (हाफिज हैसमी कहते है की यह हदीष सहीह है ।)

बरतन ख़ून से भर गए

* हजरत बुशरा अज़्वियाह ﷺ फ़रमाती है - "जब हज़रत इमामे हुसैन ﷺ शहीद किये गए तो आसमान से ख़ून बरसा । सुब्ह को हमारे मटके, घड़े और सारे बरतन ख़ून से भरे हुए थे ।" **(सवाइके मुहर्रिका, पेज-644)**
* शहादते हुसैन के बाद जो भी वाकेआत पेश आए जैसे के ज़मीन ने ख़ून उगला, आसमान से ख़ून बरसा, सूरज को ग्रहण लगा, ये सब वाकेआत बहवाला अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी, इमाम बैहकी, हाफिज अबू नुए'म अस्फहानी, अल्लामा इब्ने कसीर, इमाम जलालुद्दीन सुयूती और शाह अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दीष दहेलवी ﷺ जैसे जलीलुलकद्र मुहद्दिषीन ने अपनी मो'तबर किताबो मे नक़्ल किए है । जिनके हवाले इस किताब में मोजूद है ।

इमाम अहमद बिन हम्बल और ग़मे हुसैन

* अस्वद बिन आमीर रिवायत करते है अल रबीअ बिन मन्जर से वह अपने वालिद से की, इमाम हुसैन फ़रमाते है की :

"जो आंख हमारे ग़म में रोई या एक आंसु हमारे लिए गिराया, अल्लाह उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाजेगा।"

(फज़ाइले सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल, जिल्द-02, सफा-675, हदीस-1154, दार अल मारफा, बैरुत)

हज़रत हुसैन की ज़ियारत और उन पर रोने के फज़ाईल (सीरत व अहादीषे नबवी की रोशनी में) :

इमाम अहमद बिन हम्बल ने फज़ाईलुस्सहाबा में फज़ाइले अ़ली में नक़्ल किया है।

हमसे बयान किया अहमद बिन इसराईल ने, वोह कहते है मैं ने देखा अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल की किताब में जो उन्ही के हाथ से लिखी हुई थी के हमसे बयान किया अस्वद बिन आमिर अबू अब्दुर्रहमान ने उनसे रबीअ बिन मन्ज़र ने, उनसे उनके वालिद ने, वोह कहते है के हज़रत हुसैन बिन अ़ली फ़रमाया करते थे के, **"जिस शख़्स की दोनों आंखें मुझ पर एक भी आंसू बहाएं या कतरा भी गिराएं तो अल्लाह उसको जन्नत में दाखिल करेगा।"**

अहमद बिन अब्दुल्लाह अत्तबरी ज़ख़ाईरुल उक़बी नक़्ल करते हैं :

रबीअ बिन मन्ज़र अपने वालिद से रिवायत करते है के हुसैन बिन अ़ली फ़रमाया करते थे के **"जिस शख़्स की दोनों आंखों ने हमारे सिलसिले में एक भी आंसू बहाया या एक भी कतरा गिराया तो अल्लाह उसको जन्नत अता करेगा।" अहमद ने इसको मनाकिब में नक़्ल किया है।**

अहमद बिन अब्दुल्लाह तबरी "ज़ख़ाईरुल उक़बा" सफा 151 पर नक़्ल करते है :

मूसा बिन अ़ली रज़ा बिन जा'फ़र से रिवायत करते है के उन्हो ने फ़रमाया के जा'फ़र बिन मुहम्मद से हज़रत हुसैन की कब्र की ज़ियारत के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा के "मेरे वालिद ने मुजे बताया के 'बेशक जिसने हज़रत हुसैन की कब्र की ज़ियारत उनका हक़ समझते हुए की तो अल्लाह उसके लिए ईल्लिय्यिन लिख देगा', और फ़रमाया के **'सत्तर हज़ार पुरअंगेज़ हाल फिरिश्ते हज़रत हुसैन की कब्र के इर्दगिर्द है जो ता क़यामत उन पर रोते रहेंगे, अबूल हसन अल अतक़ीने तख़रीज की है ।"**

मुहम्मद बयूमी ने 'अस्सयिदा फ़ातिमा ज़हरा ' के सफा ४९ पर नक़्ल किया है :

इमाम अहमद ने 'फज़ाईल' में मुहिब्ब तबरी ने 'ज़ख़ाइर' में रिवायत किया है : वोह कहते है के, हमसे रिवायत किया अहमद बिन इसराईल ने, वोह कहते है के देखा अहमद बिन मुहम्मद बिन हम्बल की अपने हाथ से मख़्तूत किताब में लिखा हुवा, वोह कहते है के हुसैन बिन अ़ली फ़रमाते थे के **"जिस शख़्स की दोनों आंखे मुझ पर आंसू का एक कतरा भी गिराएं तो अल्लाह उसको जन्नत में दाख़िल करेगा।"**

बाकषीर हज़रमी 'वसीलतुल माल' सफा 60 मकतबा ज़ाहिरीया, दिमश्क के नुस्खे में नक़्ल करते है :

वोह रिवायत करते है रबीअ् बिन अल मन्ज़र से वोह अपने वालिद से वोह कहते है के हज़रत हुसैन फ़रमाया करते थे के **'जिस की दोनों आंखें मुझ पर रोई या मेरे सिलसिले में एक कतरा भी गिराऐं तो अल्लाह उसको जन्नत में दाख़िल करेगा ।'** और एक रिवायत में है के 'अल्लाह उसको जन्नत में ठिकाना देगा ।' अहमद ने 'मनाक़िब' में तख़रीज़ की है ।

(ख़ुसरो क़ासिम फी मक़तल इमाम हुसैन)

फरिश्तों का ग़मे हुसैन رضي الله عنه

* कुतबुल अकताब, गौसुस्सकलैन, महबूबे सुब्हानी, सैयद अब्दुल क़ादिर जिलानी رحمة الله عليه की तरफ मन्सूब गुनियत्तुत्तालिबिन में है की, हजरत उसामा हजरत सय्यिदना इमाम जा'फ़र सादिक़ رضي الله عنه से रिवायत फ़रमाते है की : **जिस दिन हज़रत हुसैन** رضي الله عنه **शहीद हुए उस दिन से 70,000 फरिश्ते कयामत तक रोते रहेंगे ।**

(गुनियतत्तालिबिन, पेज-432) (बहवाला - शामे करबला, पेज-235)

बाबा फरीदुद्दीन गंजेशकर का मुहब्बते हुसैन में आंसू बहाना

* सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया फ़रमाते है की, मैं माहे मुहर्रम शरीफ.... हिजरी में सुल्तानुल मशाइख़, सिराजुल औलिया, शैख़ुल इस्लाम वल मुस्लिमीन हजरत बाबा फरीदुद्दीन मस्उद गंजेशकर की ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुआ तो आपने आशूरा की फज़ीलत में फ़रमाया :
* इन अशरा में किसी और काम में मशगूल नहीं होना चाहिए । सिवाय इताअत, तिलावत, दुआ व नमाज वगैराह । इस लिए की इस अशरा में कहरे इलाही भी हुआ है और बहुत रहमते इलाही भी नाज़िल हुई है । बाद अजां फ़रमाया की, "क्या तुझे मालुम नहीं की इस अशरा में पर क्या गुजरी ? और आप के फरज़ंदो को किस तरह बेरहमी से शहीद किया गया ? बाज़ प्यास की हालत में शहीद हुए की इन बदबख्तों ने इन अल्लाह के प्यारों को पानी का एक कतरा तक न दिया । जब शैख़ुल इस्लाम ने यह बात फरमाइ तो एक नारा मार कर बेहोश होकर गिर पडे । जब होश में आए तो फ़रमाई कैसे संग दिल काफिराने आक़ेबत, बेसआदत और नामहेरबान थे ? हालांकी उन्हे ख़ूब मालूम था की यह दीन व दुनिया और आख़िरत के बादशाह के फरज़ंद है, फिर भी उन्हे बड़ी बेरहमी से शहीद किया और उन्हे यह ख्याल न आया की कल कयामत के दिन हजरत ख्वाजाए आलम को क्या मुंह दिखाऐंगे ?"

(राहतुल कुलुब, पेज-57) (बहवाला : शामे करबला, पेज-335/336)

ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया رحمۃ اللہ علیہ का ग़मे हुसैन رضی اللہ عنہ में रोना

* हजरत ख्वाजा अमीर खुसरो निज़ामी फ़रमाते है की, "मुहर्रम की 5 तारीख को सुल्तानुल औलिया हजरत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया, महबुबे इलाही رحمۃ اللہ علیہ की कदमबोसी का शर्फ हासिल हुआ । बातचीत के दौरान हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया رحمۃ اللہ علیہ खूब रोने लगे और फ़रमाया की, हज़रत फ़ातिमा رضی اللہ عنہا के जिगरगोशों का हाल सबको मालूम है की ज़ालिमों ने उनको दश्ते करबला में किस तरह भूख्रा-प्यासा शहीद किया । फिर फ़रमाया की इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ की शहादत के दिन सारा जहां तीरह व तार हो गया, बिजली चमकने लगी, आसमान और जमीन जुंबीश करने लगे, फरिश्ते अकब में थे और बार बार हक तआला से इजाज़त तलब करते थे के हुक़्म हो तो इन तमाम ईजा दरिन्दो को (यजीदीयों को) मलिया मेट कर दे । हुक्म होता है के तुम्हे उससे कुछ वास्ता नहीं है, तकदीर यूं ही है, मैं जानुं और मेरा दोस्त हुसैन رضی اللہ عنہ । तुम्हारा इसमें दखल नहीं है । मैं कयामत के दिन उन ज़ालिमों के बारे में उन्ही (अपने दोस्त) से फैसला कराउंगा, जो कुछ वह कहेंगे उसी के मुताबिक होगा ।"

(अफज़लुल फवाइदा, उर्दु तर्जमा, पेज-75) (बहवाला : शामे करबला, पेज-336)

गौसुल आलम, मेहबुबे यज़्दानी, सुल्तान सय्यिदना मख़्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ (किछौछा शरीफ) का ग़मे हुसैन ﷺ और मुहर्रम के 10 दिनों का अमल

* शैख़ुल आरफीन हजरत निज़ाम यमनी ﷺ की किताब 'लताईफे अशरफी' जिसमें सय्यिद मख़्दुम अशरफ जहांगीर सिमनानी ﷺ (किछौछा शरीफ) की सवानेह व फज़ाइल और मल्फ़ूज़ात का तज़किरा है उससे सय्यिद मख़्दुम अशरफ ﷺ का मुहर्रम के अव्वल 10 दिनों में ग़मे हुसैन ﷺ मनाने के बारे में 'लतीफा ईक्यावन : अलम व तबल वगैराहा' के बारे में 'दौराह' के जिम्मे कुछ ईस तरह नक़्ल किया गया है । **'अक़ाबिरए रोज़गार और सादातए सहीहुन्नसब का अमल है के वोह मुहर्रम के इब्तेदाह (शरुआती) दस (10) रोज़ में दौराह करते है और ज़म्बिल (Basket) को भी गर्दिश देते है । विलादते सब्ज़वार में सय्यिद अ़ली कलन्दर ख़्वाजा युसुफ चिश्ती ﷺ के मुरीद बडे आली मरतबा बुजुर्ग थे । और उनका मामुल था के मुहर्रम के अशरा अव्वल (शरुआती दिनों) में अलम के नीचे बैठते थे और अपने मुरीदों को दौराह के लिए भेज देते थे और कभी ख़ुद भी दौरा करते थे । ग़म व अंदोह के मरासिम बजा लेते, नफीस लिबास इस अशराह (10 दिनो) में नहीं पहनते थे और ऐश व शादी के अस्बाब तर्क कर देते थे ।'**
* "सय्यिद अशरफ ﷺ ने भी कभी ये दौर तर्क नही किया । सय्यिद अ़ली कलन्दर ﷺ की तरह ख़ुद अलम के नीचे बैठे और अस्हाब को दौरा की इजाज़त देते लेकिन अशराह के आख़िरी तीन दिन ख़ुद भी अस्हाब के साथ गलीयों मे गश्त लगाते थे ।"

सय्यिद मख्दुम अशरफ के पीरो मुर्शीद मख्दुम अलाउद्दीन गंजेनबात का मुहर्रम के 10 दिनों में ग़मे हुसैन

* सय्यिद अशरफ जहांगीर सिमनानी फ़रमाते थे की जब वह बंग़ाल में हज़रत अलाउद्दीन गंजेनबात (आपके पीरो मुर्शीद) की ख़िदमत में हाज़िर थे तो वहां भी एक मरतबा ये बहश हुई थी और बंग़ाल के आलिमों और फाज़िलों ने बहश और हुज्जत के बाद येह तय किया था कि यज़ीद पर लानते फिस्क जायज़ है ।
* **मख्दुम अलाउद्दीन का भी यही दस्तूर था के अशराए मुहर्रम के इब्तेदाइ दस दिन (10 Days) गिरयाज़ारी में बसर करते थे और फ़रमाते थे की वोह वली भी अजीबो गरीब होगा जो ख़ानदाने रसूल और जिगर गोशए बतुल के ग़म पर आंसू ना बहाये और उनका ग़म ना करे ।**

(बहवाला : लताइफे अशरफी (उर्दु), जिल्द-दुवम, सफहा:244-247)

मुअल्लिफ : शैख़ुल आरेफीन हज़रत निज़ाम यमनी

तरजमा : हजरत अल्लामा मौलाना हकीम सय्यिद शाह अब्दुल हयी अशरफीउल जिलानी, सज्जादानशीन व मुतवल्ली किछौछा शरीफ

मुरत्तिब : शैख़े तरीकत, काइदे ॲह्ले सुन्नत, मज़हर-उल-मशाएख़ हज़रत सय्यिद शाह मज़हरुद्दीन अशरफ अशरफी-उल-जिलानी

* इसी तरह लताईफे अशरफी के मुतरजिम 'अल्लामा शम्सुल हसन बरेल्वी और प्रोफेसर एस.एम. लतीफुल्लाहने "लतीफा-51 तबल व अलम और ज़म्बिल फिराने का बयान" के जिम्मे में कुछ इजारत तरजमा यूं फ़रमाया है :
* मजलिस में रोज़े आशुराह का ज़िक्र हुवा । हज़रत कुदवतुलकुब्रा (सय्यिद मख्दुम अशरफ) ने फ़रमाया की अकाबिराने ज़माना और बुज़ुर्गाने शेहर,

ख्रास तौर पर वोह हज़रत जो **'सहीहुन्नसब सादात'** और अ़ली हसब नक़ीब है, मुहर्रम के इब्तिदाई दस रोज़ (1 से 10 चांद मुहर्रम) दौरे पर जाते और 'ज़म्बिल' फिराते है, जैसा की बयान किया जा चूका है की मुल्क सब्ज़वार में ख्वाजा अ़ली ﷺ जो अस्हाबे सुफीया के पेश्वा और उस गिरोह के सरदार थे, **मुहर्रम के दस दिन 'अलम के नीचे' बैठते थे और अपने मुरीदों को 'दौराह' करने भेजते थे। कभी-कभी ख़ुद भी दौरे पर चले जाते और रश्मे अजादारी अदा करते थे।** मसलन अशराए मुहर्रम में बेशकिंमत लिबास नहीं पहनते थे और ऐश व ख़ुशी के अस्बाब तर्क कर देते थे।

* "हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सय्यिद मख्दुम अशरफ) ﷺ ने आशुरा के मामुलात तर्क नहीं किये, कभी ब-ज़ात ख़ुद अलम के नीचे बैठते और कभी सय्यिद अ़ली कलन्दर ﷺ को जो आप के मुख्लीस अस्हाब-व-अहबाब में से थे, उनको हुक्म फ़रमाते थे के वोह अलम के नीचे बैठे। अशरा के आख़िरी दो-तीन रोज़ (या'नी मुहर्रम के 8, 9, 10 चांद) यज़ीद पर लानत करते थे और आप के अस्हाब भी आप की मवाफक़त करते थे।"
* हज़रत कुदवतुल कुब्रा (सय्यिद मख्दुम अशरफ) ﷺ फ़रमाते थे, "हज़रत शैख़ (आप के पीरो मुर्शीद मख्दुम अलाउद्दीन ﷺ) मुहर्रम की पेहली तारीख़ से दस तारीख़ तक गिरया व ज़ारी करते थे और फ़रमाते थे के **वोह अजीब दिल है जो ख़ानदाने रसूल ﷺ और जिगर गोशाने बतुल ﷺ के मातम में ना रोये और उनकी ग़म पुरसी बे-तआल्लुक हो जाए। सुब्हानल्लाह यही हक़ीकी नियाजमंदी है।"**

तर्जमा : जो शख़्स इस तरह के ग़म पर गिरया व ज़ारी ना करे शायद उस का दिल पथ्थर का होगा।

(लताईफे अशरफी, जिल्द-03, सफहा : 425-433)

जो आँख हमारे (अह्ले बैत के) ग़म में रोई या एक
कतरा आंसु हमारे लिए गिराया,
अल्लाह ﷻ उसे बहिश्त (जन्नत) से नवाज़ेगा
- **सय्यिदना इमाम हुसैन** رضي الله عنه

(फ़ज़ाइले सहाबा, इमाम अहमद बिन हम्बल رحمة الله عليه)

Imam Jafar Sadiq Foundation
(Ahle Sunnat)

Modasa, Aravalli, Gujarat (India)

Mo. 85110 21786